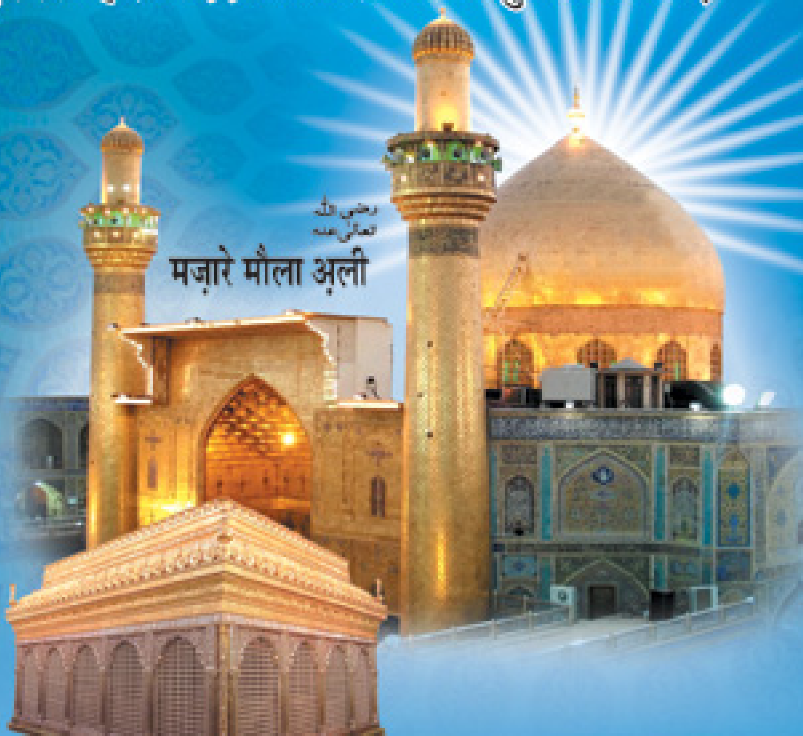
Karamate Shere Khuda (Hindi)

كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم

करामाते शेरे ख़ुदा

(मअ़ ग़ैरुल्लाह से मदद मांगने के बारे में सुवाल जवाब)



शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

مكتبة المدينة

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(करामाते शेरे ख़ुदा)

येह रिसाला **(करामाते शेरे ख़ुदा)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) । (تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج ۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

फ़ेहरिस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

करामाते शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला अव्वल ता आख़िर पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब व मा'लूमात के साथ साथ ह़ज़रते शेरे ख़ुदा से उल्फ़त व अ़क़ीदत का जज़्बा दिल में बढ़ता मह़सूस फ़रमाएंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मौला अ़ली ने ख़ाली हथेली पर दम किया और......

एक बार किसी भिकारी ने कुफ़्फ़ार से सुवाल किया, उन्हों ने मज़ाक़न **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे । उस ने ह़ाज़िर हो कर दस्ते सुवाल दराज़ किया, आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने **10 बार दुरूद शरीफ़** पढ़ कर उस की हथेली पर दम कर दिया और फ़रमाया : मुठ्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर खोल दो । (कुफ़्फ़ार हंस रहे थ कि ख़ाली फूंक मारने स क्या होता है !) मगर जब साइल ने उन के सामने जा कर मुठ्ठी खोली तो उस में **एक दीनार** था ! येह **करामत** देख कर कई काफ़िर मुसल्मान हो गए । **(راحتُ القلوب ص١٤٢)**

विर्द जिस ने किया दुरूद शरीफ़ और दिल से पढ़ा दुरूद शरीफ़
ह़ाजतें सब रवा हुईं उस की है अ़जब कीमिया दुरूद शरीफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कटा हुवा हाथ जोड़ दिया

एक ह़ब्शी गुलाम जो कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ैदरे कर्रार, साह़िबे ज़ुल फ़िक़ार, ह़-सनैने करीमैन के वालिदे बुज़ुर्ग-वार, ह़ज़रते मौला मुश्किल कुशा **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से बहुत **मह़ब्बत** करता था, शामते आ'माल से उस ने एक मर्तबा चोरी कर ली। लोगों ने उस को पकड़ कर दरबारे ख़िलाफ़त में पेश कर दिया और गुलाम ने अपने जुर्म का इक़रार भी कर लिया। **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने हुक्मे शर-ई नाफ़िज़ करते हुए उस का हाथ काट दिया। जब वोह अपने घर को रवाना हुवा तो रास्ते में ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ और **इब्नुल कव्वाअ** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मुलाक़ात हो गई। इब्नुल **कव्वाअ** ने पूछा : "तुम्हारा हाथ किस ने काटा ?" तो गुलाम ने कहा : "**अमीरुल मुअमिनीन** व या'सूबुल मुस्लिमीन व ज़ौजे बतूल (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने।" इब्नुल **कव्वाअ** ने ह़ैरत से कहा : "उन्हों ने तुम्हारा हाथ काट डाला फिर भी तुम इस क़दर ए'ज़ाज़ो इक्राम के साथ उन का नाम लेते हो !" गुलाम ने कहा : **"मैं उन की ता'रीफ़ क्यूं न करूं ! उन्हों ने ह़क़ पर मेरा हाथ काटा और मुझे अ़ज़ाबे जहन्नम से बचा लिया।"** ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने दोनों की गुफ़्त-गू सुनी और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से इस का तज़्किरा किया तो आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने उस गुलाम

को बुलवाया और उस का कटा हुवा हाथ कलाई पर रख कर रुमाल से छुपा दिया फिर कुछ पढ़ना शुरूअ़ कर दिया, इतने में एक ग़ैबी आवाज़ आई : ''कपड़ा हटाओ।'' **जब लोगों ने कपड़ा हटाया तो ग़ुलाम का कटा हुवा हाथ कलाई से इस त़रह़ जुड़ गया था कि कहीं कटने का निशान तक नहीं था !** (تفسیرِ کبیرج۷ص۴۳۴)

ऐ शबे हिजरत बजाए मुस्त़फ़ा बर रख़्ते ख़्वाब
ऐ दमे शिद्दत फ़िदाए मुस्त़फ़ा इमदाद कुन

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : ऐ हिजरत की रात सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक बिछोने पर लैटने वाले ! ऐ ऐसे सख़्त इम्तिह़ान के लम्ह़ात में शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर जान का नज़राना ह़ाज़िर करने वाले ! मेरी इमदाद फ़रमाइये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

करामत की ता'रीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मौला मुश्किल कुशा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ले **अ़मीम** से किस त़रह़ अपने ग़ुलाम का कटा हुवा बाज़ू जोड़ दिया ! बेशक रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ अपने मक़्बूल बन्दों को त़रह़ त़रह़ के **इख़्तियारात** से नवाज़ता है और उन से ऐसी बातें सादिर होती हैं जिन्हें इन्सानी अ़क़्लें समझने से क़ासिर होती हैं। बा'ज़ अवक़ात शैत़ान के वस्वसे में आ कर बा'ज़ नादान **करामात** को

अ़क़्ल के तराज़ू में तोलने लगते हैं और यूं गुमराह हो जाते हैं। याद रखिये ! **करामत** कहते ही उस ख़िलाफ़े आ़दत बात को जो आ़दतन मुह़ाल या'नी ज़ाहिरी अस्बाब के ज़रीए़ उस का ज़ाहिर होना मुम्किन न हो। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 58 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **नबी** से क़ब्ल अज़ ए'लाने नुबुव्वत ऐसी चीज़ें ज़ाहिर हों तो उन को **इरहास** कहते हैं और ए'लाने नुबुव्वत के बा'द सादिर हों तो **मो'जिज़ा** कहते हैं, आ़म मुअमिनीन से अगर ऐसी चीज़ें ज़ाहिर हों तो उसे **मऊ़नत** और वली से ज़ाहिर हों तो **करामत** कहते हैं नीज़ काफ़िर या फ़ासिक़ से कोई ख़िलाफ़े आ़दत ज़ाहिर हो तो उसे **इस्तिदराज** कहते हैं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 58, मुलख़्ख़सन)

अ़क़्ल को तन्क़ीद से फ़ुरसत नहीं
इ़श्क़ पर आ'माल की बुन्याद रख

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

दरिया की तुग़्यानी ख़त्म हो गई

एक मर्तबा नहरे फ़ुरात में ऐसी ख़ौफ़नाक तुग़्यानी आ गई (या'नी तूफ़ान आ गया) कि सैलाब में तमाम खेतियां ग़रक़ाब हो (या'नी डूब) गईं लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा** كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की बारगाहे बेकस पनाह में फ़रियाद की। आप كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़ौरन उठ

खड़े हुए और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का जुब्बए मुबा–रका व इमामए मुक़द्दसा व चादरे मुबा–रका ज़ैबे तन फ़रमा कर घोड़े पर सुवार हुए, ह़ज़राते ह़–सनैने करीमैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और दीगर कई ह़ज़रात भी हमराह चल पड़े। फ़ुरात के कनारे आप کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने दो रक्अ़त नमाज़ अदा की, फिर पुल पर तशरीफ़ ला कर अपने अ़सा से नहरे फ़ुरात की त़रफ़ इशारा किया तो उस का पानी एक गज़ कम हो गया, फिर दूसरी मर्तबा इशारा फ़रमाया तो मज़ीद एक गज़ कम हुवा जब तीसरी बार इशारा किया तो तीन गज़ पानी उतर गया और सैलाब ख़त्म हो गया। लोगों ने इल्तिजा की : **या अमीरल मुअमिनीन !** बस कीजिये येही काफ़ी है। **(شواھدُ النّبوۃ ص۲۱٤)**

शाहे मर्दां शेरे यज़्दां क़ुव्वते परवर दगार
ला फ़ता इल्ला अ़ली, ला सै–फ़ इल्ला ज़ुल फ़िक़ार

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चश्मा उबल पड़ा !

मक़ामे सिफ़्फ़ीन जाते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा** کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का लश्कर एक ऐसे मैदान से गुज़रा जहां पानी नहीं था, पूरा लश्कर प्यास की शिद्दत से बेताब हो गया। वहां एक गिर्जा घर था, उस के राहिब ने बताया कि यहां से दो फ़रसख़ (या'नी तक़रीबन 14 किलो मीटर) के फ़ासिले पर पानी मिल सकेगा। कुछ ह़ज़रात ने वहां जा कर पानी पीने की इजाज़त त़लब की, येह सुन कर आप کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم अपने **ख़च्चर** पर सुवार हो गए

और एक जगह की त़रफ़ इशारा कर के खोदने का हुक्म फ़रमाया, खुदाई शुरूअ़ हुई, एक पथ्थर ज़ाहिर हुवा, उसे निकालने की तमाम तर कोशिशें नाकाम हो गईं, येह देख कर मौला मुश्किल कुशा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم सुवारी से उतरे और दोनों हाथों की उंग्लियां उस पथ्थर की दराड़ में डाल कर ज़ोर लगाया तो वोह पथ्थर निकल पड़ा और उस के नीचे से एक निहायत साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ औरी शीरीं (या'नी मीठे) पानी का **चश्मा उबल पड़ा !** और तमाम लश्कर उस से सैराब हो गया। लोगों ने अपने जानवरों को भी पिलाया और मश्कीज़े भी भर लिये, फिर आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने वोह पथ्थर उस की जगह पर रख दिया। गिर्जा घर का ईसाई राहिब येह **करामत** देख कर मौला मुश्किल कुशा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमत में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : क्या आप नबी हैं ? फ़रमाया : नहीं। पूछा : क्या आप फ़िरिश्ते हैं ? फ़रमाया : नहीं। उस ने कहा : फिर आप कौन हैं ? फ़रमाया : मैं पैग़म्बरे मुरसल ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन **अ़ब्दुल्लाह ख़ा-तमुन्नबिय्यीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का सह़ाबी हूं और मुझ को ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने चन्द बातों की वसिय्यत भी फ़रमाई है। इतना सुनते ही वोह ईसाई राहिब कलिमा शरीफ़ पढ़ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया। आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : तुम ने इतनी मुद्दत तक इस्लाम क्यूं क़बूल नहीं किया था ? राहिब ने कहा : हमारी किताबों में येह लिखा हुवा है कि इस गिर्जा घर के क़रीब पानी का एक चश्मा पोशीदा है, इस चश्मे को वोही शख़्स ज़ाहिर करेगा जो नबी होगा या नबी का सह़ाबी। चुनान्चे मैं और मुझ से पहले बहुत से राहिब इस गिर्जा घर में इसी इन्तिज़ार में मुक़ीम रहे। आज आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने

येह चश्मा ज़ाहिर कर दिया तो मेरी मुराद बर आई इस लिये मैं ने दीने इस्लाम क़बूल कर लिया। राहिब का बयान सुन कर शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم **रो पड़े** और इस क़दर रोए कि रीश मुबारक आंसूओं से तर हो गई, फिर इर्शाद फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ कि इन लोगों की किताबों में भी मेरा ज़िक्र है। येह राहिब मुसल्मान हो कर आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के ख़ादिमों और मुजाहिदों में शामिल हो गया और शामियों से जंग करते हुए शहीद हो गया और मौला मुश्किल कुशा ने अपने दस्ते मुबारक से उसे दफ़्न किया और उस के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ फ़रमाई। (मुलख़्ख़स अज़ करामाते सहा़बा, स. 114, **شواهد النبوة ص** ٢١٦)

मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा, मरह़ब कुशा, ख़ैबर कुशा
सरवरा लश्कर कुशा मुश्किल कुशा इमदाद कुन

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : ऐ मुर्तज़ा (या'नी पसीन्दीदा व मक़्बूल) ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शेर, ऐ मरह़ब (मरह़ब बिन ह़ारिस नामी यहूदी, अ़रब के नामवर पहलवान और क़ल्अ़ए ख़ैबर के रईसे आ'ज़म) को पछाड़ने वाले ! ऐ फ़ातेहे़ ख़ैबर ! ऐ मेरे सरदार ! ऐ तने तन्हा दुश्मन के लश्कर को शिकस्त देने वाले ! ऐ मुश्किलात ह़ल फ़रमाने वाले ! मेरी इमदाद फ़रमाइये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ालिज ज़दा अच्छा हो गया

एक मर्तबा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم अपने दोनों

शहज़ादों ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन व इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के साथ ह़-रमे का'बा में ह़ाज़िर थे कि देखा वहां एक शख़्स ख़ूब रो रो कर अपनी ह़ाजत के लिये दुआ़ मांग रहा है। आप کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने हुक्म दिया कि इस शख़्स को मेरे पास लाओ। इस शख़्स की एक करवट चूंकि **फ़ालिज ज़दा** थी लिहाज़ा ज़मीन पर घिसटता हुवा ह़ाज़िर हुवा, आप کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने उस का वाक़िआ़ दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! मैं गुनाहों के मुआ़-मले में निहायत बेबाक था, मेरे वालिदे मोह़तरम जो कि एक नेक व सालेह़ मुसल्मान थे, मुझे बार बार टोकते और गुनाहों से रोकते थे, एक दिन वालिदे माजिद की नसीह़त से मुझे गुस्सा आ गया और मैं ने उन पर हाथ उठा दिया ! मेरी मार खा कर वोह रन्जो ग़म में डूबे हुए ह़-रमे का'बा में आए और उन्हों ने मेरे लिये बद दुआ़ कर दी, उस दुआ़ के असर से अचानक मेरी एक करवट पर फ़ालिज का **ह़म्ला** हो गया और मैं ज़मीन पर घिसट कर चलने लगा। इस ग़ैबी सज़ा से मुझे बड़ी इ़ब्रत ह़ासिल हुई और मैं ने रो रो कर वालिदे मोह़तरम से मुआ़फ़ी मांगी, उन्हों ने शफ़्क़ते पि-दरी से मग़्लूब हो कर मुझ पर रह़्म खाया और मुआ़फ़ कर दिया। फिर फ़रमाया : ''बेटा चल ! मैं ने जहां तेरे लिये बद दुआ़ की थी वहीं अब तेरे लिये सिह़्ह़त की दुआ़ मांगूंगा।'' चुनान्चे हम बाप बेटे ऊंटनी पर सुवार हो कर के मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا आ रहे थे कि रास्ते में यकायक ऊंटनी बिदक कर भागने लगी और मेरे वालिदे माजिद उस की पीठ पर से गिर कर दो चट्टानों के दरमियान वफ़ात पा गए। اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن

अब मैं अकेला ही ह़-रमे का'बा में ह़ाज़िर हो कर दिन रात रो रो कर ख़ुदा तआ़ला से अपनी तन्दुरुस्ती के लिये दुआ़एं मांगता रहता हूं। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को उस की दास्ताने इ़ब्रत निशान सुन कर उस पर बड़ा रह़्म आया और फ़रमाया : "ऐ शख़्स ! अगर वाक़ेई तुम्हारे वालिद साहि़ब तुम से राज़ी हो गए थे तो इत़्मीनान रखो اِنْ شَآءَاللّٰه सब बेहतर हो जाएगा, फिर आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने चन्द रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर उस के लिये दुआ़ए सिह़्ह़त की फिर फ़रमाया : "قُمْ ! या'नी खड़ा हो !" येह सुनते ही वोह बिला तकल्लुफ़ उठ कर खड़ा हो गया और चलने फिरने लगा। (مُلَخَّص ازحجةُ الله علَى العالمين ص٦١٤)

क्यूं न मुश्किल कुशा कहूं तुम को
तुम ने बिगड़ी मेरी बनाई है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औलादे अ़ली के साथ ह़ुस्ने सुलूक का बदला

अबू जा'फ़र नामी एक शख़्स कूफ़ा में रहता था, लैन दैन के मुआ़-मले में वोह हर एक के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आता था, बिल ख़ुसूस औलादे अ़ली का कोई फ़र्द उस के यहां कुछ ख़रीदारी करता तो वोह जितनी भी कम क़ीमत अदा करता क़बूल कर लेता वरना ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के नाम क़र्ज़ लिख देता। गर्दिशे दौरां के बाइ़स वोह मुफ़्लिस हो गया। एक दिन वोह घर के दरवाज़े पर बैठा था कि एक आदमी उधर से गुज़रा, और उस ने मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा : "तुम्हारे बड़े मक़्रूज़ (या'नी ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने क़र्ज़ा अदा

किया या नहीं ?" उस को इस त़न्ज़ का सख़्त सदमा हुवा । रात जब सोया तो ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़ याब हुवा, ह़-सनैने करीमैन (या'नी ह़सन व हुसैन) رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُمَا भी हमराह थे, आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने शहज़ादगान से दरयाफ़्त किया : "तुम्हारे वालिद साह़िब का क्या ह़ाल है ?" ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने पीछे से जवाब दिया : **या रसूलल्लाह** ! मैं ह़ाज़िर हूं । इर्शाद हुवा : "क्या वजह है कि इस का ह़क़ अदा नहीं करते ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं रक़म हमराह लाया हूं ।" फ़रमाया : इस के ह़वाले कर दो । ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने एक ऊनी थेली उन के ह़वाले कर दी और फ़रमाया : "येह तुम्हारा ह़क़ है ।" रसूले मुकर्रम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इसे वुसूल कर लो और इस के बा'द भी इन की औलाद में से जो क़र्ज़ लेने आए उस को मह़रूम न लौटाना, आज के बा'द तुम्हें फ़क़्रो फ़ाक़ा और मुफ़्लिसी व तंगदस्ती की शिकायत नहीं होगी ।" जब बेदार हुवा तो वोह थेली उस के हाथ में थी ! उस ने अपनी बीवी को बुला कर कहा : येह तो बताओ कि मैं सोया हुवा हूं या जाग रहा हूं ? उस ने कहा : "आप जाग रहे हैं ।" वोह ख़ुशी के मारे फूला नहीं समाता था, सारा क़िस्सा अपनी ज़ौजए मोह़-त-रमा से बयान किया, जब मक़रूज़ों की फ़ेहरिस्त देखी तो उस में ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के नाम ज़र्रा भर क़र्ज़ा बाक़ी नहीं था । (या'नी फ़ेहरिस्त से वोह तमाम लिखा हुवा क़र्ज़ा साफ़ हो चुका था) **(شَواہِدُ الحق ص۲۴۶)**

अ़ली के वासित़े सूरज को फैरने वाले

इशारा कर दो कि मेरा भी काम हो जाए

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

नाम व अल्क़ाब

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली मुश्किल कुशा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में पैदा हुए। आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति़मा बिन्ते असद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अपने वालिद के नाम पर आप का नाम "**हैदर**" रखा, वालिद ने आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم का नाम "**अ़ली**" रखा। हु़ज़ूरे पुरनूर, **शाफ़ेए यौमुन्नुशूर** صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को "**अ-सदुल्लाह**" के लक़ब से नवाज़ा, इस के इ़लावा "**मुर्तज़ा** (या'नी चुना हुवा)", "**कर्रार** (या'नी पलट पलट कर ह़म्ले करने वाला)", "**शेरे ख़ुदा**" और "**मौला मुश्किल कुशा**" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मशहूर अल्क़ाबात हैं। आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم मक्की म-दनी आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद भाई हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 412 वग़ैरा मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते अ़ली का मुख़्तसर तआ़रुफ़

ख़लीफ़ए चहारुम, जा नशीने रसूल, ज़ौजे बतूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की कुन्यत "**अबुल ह़सन**" और "**अबू तुराब**" है। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ शहन्शाहे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاكم)

अबरार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हैं **आ़मुल फ़ील**[1] के **30** साल बा'द (जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ **30** बरस थी) **13 र-जबुल मुरज्जब** बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ख़ानए का'बा शरीफ़ زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के अन्दर पैदा हुए ।[2] मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की वालिदए माजिदा का नाम ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति़मा बिन्ते असद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا है । आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم **10** साल की उ़म्र में ही दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए थे और शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत, शाफ़ेए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ेरे तरबिय्यत रहे और ता दमे ह़यात आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इमदाद व नुसरत और दीने इस्लाम की ह़िमायत में मसरूफ़े अ़मल रहे । आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم मुहाजिरीने अव्वलीन और अ़-श-रए मुबश्शरह में शामिल होने और दीगर ख़ुसूसी द-रजात से मुशर्रफ़ होने की बिना पर बहुत ज़ियादा मुमताज़ ह़ैसिय्यत रखते हैं । ग़ज़्वए बद्र, ग़ज़्वए उहुद, ग़ज़्वए **ख़न्दक़** वग़ैरा तमाम इस्लामी जंगों में अपनी बे पनाह शुजाअ़त के साथ शिर्कत फ़रमाते रहे और कुफ़्फ़ार के बड़े बड़े नामवर बहादुर आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की तलवारे ज़ुल फ़िक़ार के क़ाहिराना वार से वासिले नार हुए । **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की शहादत

1 : या'नी जिस साल ना मुराद व ना हन्जार अब-रहा बादशाह हाथियों के लश्कर के हमराह का'बए मुशर्रफ़ा पर ह़म्ला आवर हुवा था । इस वाक़िए़ की तफ़्सील जानने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "**अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन**" का मुता़-लआ़ कीजिये । 2 : مُستَدرَک ج ٤ ص ٦١١ حديث ٦٠٩٨

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (کنزالعمال)

के बा'द अन्सार व मुहाजिरीन ने दस्ते बा ब-र-कत पर **बैअ़त** कर के आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को **अमीरुल मुअमिनीन मुन्तख़ब** किया और **4** बरस **8** माह **9** दिन तक मस्नदे ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ रहे । **17** या **19 र-मज़ानुल मुबारक** को एक ख़बीस ख़ारिजी के क़ातिलाना ह़म्ले से शदीद ज़ख़्मी हो गए और **21** र-मज़ान शरीफ़ यक शम्बा (इतवार) की रात जामे शहादत नोश फ़रमा गए ।

(تاریخ الْخُلَفاء ص۱۳۲، اسد الغابة ج٤ ص۱۲۸، ۱۳۲، ازالة الخفاء ج٤ص٤۰٥، معرفة الصحابة ج۱ص۱۰۰وغیره)

अस्ले नस्ले सफ़ा वज्हे वस्ले ख़ुदा

बाबे फ़स्ले विलायत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ख़ालिस पाक सादात की जड़ और बुन्याद हैं, वासिल बिल्लाह होने (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब बनने) का सबब और फ़ज़ाइले विलायत मिलने का दरवाज़ा हैं, आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم पर लाखों सलाम हों।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم" कहने लिखने का सबब

जब कुरैश मुब्तलाए **क़ह़्त़** हुए थे तो **हुज़ूरे** अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अबू त़ालिब पर तख़्फ़ीफ़े इयाल (या'नी बाल बच्चों का बोझ हलका करने) के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को अपनी बारगाहे ईमान पनाह में ले आए, ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने हुज़ूर मौलाए कुल **सय्यिदुर्रुसुल** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के किनारे अक़्दस (या'नी आग़ोशे

मुबारक) में परवरिश पाई, हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की गोद में होश संभाला, आंख खुलते ही मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का जमाले जहां आरा देखा, हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही की बातें सुनीं, आ़दतें सीखीं । तो जब से इस जनाबे इ़रफ़ान मआब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को होश आया क़त़्अ़न यक़ीनन रब عَزَّوَجَلَّ को एक ही जाना, एक ही माना । हरगिज़ हरगिज़ बुतों की नजासत से इन का दामने पाक कभी आलूदा न हुवा । इसी लिये ल-क़बे करीम "كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہٗ" मिला । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 28, स. 436) 10 बरस की उ़म्र में श-जरे इस्लाम के साए में आ गए, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से लाडली शहज़ादी ह़ज़रते सय्यि-दतुना **फ़ाति़-मतुज़्ज़हरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही की ज़ौजिय्यत में आईं । बड़े शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन **मुज्तबा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की निस्बत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुन्यत "**अबुल ह़सन**" है और मदीने के सुल्त़ान, सरदारे दो जहान, रह़मत आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को "**अबू तुराब**" कुन्यत अ़त़ा फ़रमाई । (**تاریخ الخلفاء ص۱۳۲**) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को येह **कुन्यत** अपने अस्ली नाम से भी ज़ियादा प्यारी थी । (**بُخاری ج۲ ص ۵۳۵ حدیث۳۷۰۳**)

"अबू तुराब" कुन्यत कब और कैसे मिली !

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم एक रोज़ शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते सय्यि-दतुना **फ़ाति़-मतुज़्ज़हरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास गए और फिर मस्जिद में आ कर लैट गए। (इन के जाने के बा'द) ताजदारे **मदीनए मुनव्वरह**, सुल्ता़ने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (घर तशरीफ़ लाए और) बीबी फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से उन के बारे में पूछा। उन्हों ने जवाब दिया कि मस्जिद में हैं। आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए और मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि (ह़ज़रते) अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) पर से चादर हट गई है, जिस की वजह से पीठ, मिट्टी से आलूदा है। रसूले करीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم उन की पीठ से मिट्टी झाड़ने लगे और दो मर्तबा फ़रमाया : **قُمْ اَبَا تُرَابٍ** या'नी **उठो ! ऐ अबू तुराब।**

(بُخاری ج۱ص۱٦٩حدیث٤٤١)

उस ने ल-क़बे ख़ाक शहन्शाह से पाया
जो ह़ैदरे कर्रार कि मौला है हमारा

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लम्ह़े भर में कु़रआन ख़त्म कर लेते

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم जब सुवारी करते वक़्त घोड़े की रिकाब में पाउं रखते तो तिलावते कु़रआन शुरूअ़ करते और **दूसरी रिकाब में पाउं रखने से पहले पूरा कु़रआने मजीद ख़त्म फ़रमा लेते।**

(شواھدُ النّبوۃ ص۲۱۲)

मौला अ़ली की शान ब ज़बाने क़ुरआन

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर **274** में इर्शाद फ़रमाया :

اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِیَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में, छुपे और ज़ाहिर, उन के लिये उन का नेग (इन्आ़म, हिस्सा) है उन के रब के पास, उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।

चार दिरहम ख़ैरात करने के 4 अन्दाज़

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **"तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबा-रका के तह़त फ़रमाते हैं : "एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़ज़रते **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के ह़क़ में नाज़िल हुई जब कि आप के पास फ़क़त़ चार[4] दराहिम (चांदी के सिक्के) थे और कुछ न था आप (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم) ने उन चारों को ख़ैरात कर दिया। एक रात में, एक दिन में, एक को पोशीदा (या'नी छुपा कर) और एक को ज़ाहिर।"

सुख़न आ कर यहां अ़त्तार का इत्माम को पहुंचा
तेरी अ़-ज़मत पे नात़िक़ अब भी हैं आयाते क़ुरआनी

(वसाइले बख़्शिश, स. 498)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हमारा ख़ैरात करने का अन्दाज़

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! क्या शान है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की ! जैसा कि आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया कि वोह मालो दौलत जम्अ़ करने के बजाए इख़्लास के साथ ख़ैरात करना पसन्द फ़रमाते हैं। अमीरुल मुअमिनीन, नासिरुल मुस्लिमीन, पैकरे जूदो सख़ा, मौला मुश्किल कुशा, शेरे ख़ुदा ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के पास **4** दिरहम थे वोह सब राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ ख़ैरात किये कि एक दिन को, एक रात को, एक पोशीदा और एक ज़ाहिर कि मा'लूम नहीं, कौन सा दिरहम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ज़ियादा क़बूलिय्यत का शरफ़ पा कर रह़मतों और ब-र-कतों की ला ज़वाल दौलत में मज़ीद इज़ाफ़े का सबब बन जाए। दूसरी त़रफ़ हमारी ह़ालत येह है कि अगर कभी स-दक़ा व ख़ैरात करने की हिम्मत कर भी ली तो कहां रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की निय्यत.....! कैसा इख़्लास और कहां की **लिल्लाहिय्यत.....!** बस किसी त़रह़ लोगों को मा'लूम हो जाए कि जनाब ने आज इतने रुपै ख़ैरात कर डाले ! जब तक हमारे स-दक़ा व ख़ैरात को शोहरत न मिल जाए क़रार नहीं आता, मस्जिद में कुछ दे दिया तो ख़्वाहिश होती है कि इमाम साह़िब नाम ले कर दुआ़ कर दें ताकि लोगों को मेरे चन्दा देने का पता चल जाए। **किसी मुसल्मान की ख़ैर ख़्वाही की** तो तमन्ना येही होती है कि अब कोई ऐसी सूरत भी बने कि हमारा नाम आ जाए, लोगों की ज़बानें हमारी सख़ावत के तराने गाएं, किसी पर एह़सान किया तो ख़्वाहिश होती है कि येह हमारा ख़ादिम बन कर रहे, हमारी ता'रीफ़ों के पुल बांधे ह़ालां कि क़ुरआने पाक हमें एह़सान न जताने और उस का बदला सिर्फ़ **अल्लाह तआ़ला** की ज़ात से मांगने का हुक्म दे रहा है।

जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह **3**, **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर **262** में इर्शाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّ لَاۤ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग (इन्आ़म) उन के रब के पास है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयते मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : "**एह़सान रखना** तो येह कि देने के बा'द दूसरों के सामने इज़्हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और उस को मुकद्दर (या'नी ग़मगीन) करें और **तक्लीफ़ देना** येह कि उस को आ़र दिलाएं (या'नी शरमिन्दा करें) कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मजबूर था, निकम्मा था हम ने तेरी ख़बर गीरी की या और त़रह़ दबाव दें येह मम्नूअ़ फ़रमाया गया।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान) काश ! पैकरे इख़्लासो सफ़ा, मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के सदक़े हमें भी इख़्लास के साथ स-दक़ा व ख़ैरात करने का जज़्बा व सआ़दत नसीब हो जाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मौला अ़ली की क़ुरआन फ़हमी

ज़ाहिरी व बातिनी उ़लूम पर ख़बरदार, साहिबे सीनए पुर अन्वार, मौला अ़ली हैदरे कर्रार کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم (बतौरे तहदीसे ने'मत) फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं क़ुरआने करीम की हर आयत के बारे में जानता हूं कि वोह कब और कहां नाज़िल हुई। बेशक मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे समझने वाला दिल और सुवाल करने वाली ज़बान अ़ता फ़रमाई है।'' **(حِلیۃُ الاولیاء ج۱ ص۱۰۸)**

दे तड़पने फड़कने की तौफ़ीक़ दे
दे दिले मुर्तज़ा सोज़े सिद्दीक़ दे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सूरए फ़ातिहा की तफ़्सीर

अमीरुल मुअमिनीन, मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अगर मैं चाहूं तो ''सू-रतुल फ़ातिहा'' की तफ़्सीर से 70 ऊंट भर दूं।''** (या'नी उस की तफ़्सीर लिखते हुए इतने रजिस्टर (Registers) तय्यार हो जाएं कि 70 ऊंटों का बोझ बन जाए) **(قوتُ القلوب ج۱ ص۹۲)**

शहरे इल्मो हिक्मत का दरवाज़ा

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : (1) ''**اَنَا مَدِیْنَۃُ الْعِلْمِ وَعَلِیٌّ بَابُھَا**'' या'नी मैं इल्म का शहर हूं और अ़ली उस का दरवाज़ा हैं।'' **(مُستَدرَک ج٤ ص٩٦ حدیث ٤٦٩٣)** (2) ''**اَنَا دَارُالْحِکْمَۃِ وَعَلِیٌّ بَابُھَا**'' या'नी मैं

हिक्मत का घर हूं और अ़ली उस का दरवाज़ा हैं ।''

(ترمذی ج٥ ص٤٠٢ حدیث٣٧٤٤)

मौला अ़ली की शान ब ज़बाने नबिय्ये ग़ैबदान

हज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम, **नबिय्ये मुह़्तशम**, ताजदारे उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मुझे मुख़ात़ब करते हुए) इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में (हज़रते) ईसा (عَلَيۡهِ السَّلَام) की मिसाल है, जिन से यहूद ने बुग़्ज़ रखा ह़त्ता कि उन की वालिदए माजिदा को तोहमत लगाई और उन से ईसाइयों ने **मह़ब्बत** की तो उन्हें उस द-रजे में पहुंचा दिया जो उन का न था ।'' फिर शेरे ख़ुदा हज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे बारे में **दो क़िस्म के लोग हलाक होंगे** मेरी **मह़ब्बत** में इफ़रात़ करने (या'नी ह़द से बढ़ने) वाले मुझे उन सिफ़ात से बढ़ाएंगे जो मुझ में नहीं हैं और बुग़्ज़ रखने वालों का बुग़्ज़ उन्हें इस पर उभारेगा कि मुझे बोहतान लगाएंगे ।''

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج١ ص٣٣٦ حدیث١٣٧٦)

तफ़्ज़ील का जोया न हो मौला की विला में
यूं छोड़ के गौहर को न तू बहरे ख़ज़फ़ जा

(ज़ौक़े ना'त)

या'नी हज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم की **मह़ब्बत** में इतना न बढ़ कि आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم को शैख़ैने करीमैन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا पर फ़ज़ीलत देने लगे ! ऐसी भूल कर के मोतियों जैसे साफ़ शफ़्फ़ाफ़ अ़क़ीदे को छोड़ कर ठीकरियों जैसा रद्दी अ़क़ीदा इख़्तियार न कर ।

अ़दावते अ़ली

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे मुबा-रका के तह़त फ़रमाते हैं : "**मह़ब्बते अ़लिय्युल (मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم **)** अस्ले ईमान है। हां ! मह़ब्बत में ना जाइज़ इफ़रात़ (या'नी ह़द से बढ़ना) बुरा है मगर अ़दावते अ़ली अस्ल ही से ह़राम बल्कि कभी कुफ़्र है।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 424)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा हैं
कि इन से ख़ुश ह़बीबे किब्रिया हैं

ज़ाहिरो बात़िन के अ़ालिम

फ़क़ीहे उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ऐसे अ़ालिम हैं जिन के पास ज़ाहिरो बात़िन[1] दोनों का इ़ल्म है।"

(اِبن عَساکِر ج ٤٢ ص ٤٠٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 : ज़ाहिरी मुराद इस का लफ़्ज़ी तरजमा है बात़िनी मुराद इस का मन्शा और मक़्सद या ज़ाहिर शरीअ़त है और बात़िन त़रीक़त या ज़ाहिर अह़काम हैं और बात़िन असरार या ज़ाहिर वोह है जिस पर उ़-लमा मुत्त़लअ़ हैं और बात़िन वोह है जिस से सूफ़ियाए किराम ख़बरदार हैं या ज़ाहिर वोह जो नक़्ल से मा'लूम हो बात़िन वोह जो कश्फ़ से मा'लूम हो।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 210)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

"अ़ली" के 3 हुरूफ़ की निस्बत से मौला अ़ली के मज़ीद 3 फ़ज़ाइल

अमीरुल मुअमिनीन, ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन, इमामुल आ़दिलीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : फ़ातेहे ख़ैबर, हैदरे कर्रार, साहिबे ज़ुल फ़िक़ार ह़ज़रते **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को **3 ऐसी फ़ज़ीलतें ह़ासिल हैं** कि अगर उन में से एक भी मुझे नसीब हो जाती तो वोह मेरे नज़्दीक सुर्ख़ ऊंटों से भी मह़बूब तर होती। सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने पूछा : वोह **3** फ़ज़ाइल कौन से हैं ? फ़रमाया : ﴾**1**﴿ **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी साहिब ज़ादी ह़ज़रते फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को इन के निकाह़ में दिया ﴾**2**﴿ इन की रिहाइश सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ **मस्जिदुन-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में थी और इन के लिये मस्जिद में वोह कुछ ह़लाल था जो इन्हीं का ह़िस्सा है। और ﴾**3**﴿ ग़ज़्वए ख़ैबर में इन को परचमे इस्लाम अ़ता फ़रमाया गया। **(مُستَدرَك ج٤ ص٩٤ حديث٤٦٨٩)**

बहरे तस्लीमे अ़ली मैदां में
सर झुके रहते हैं तलवारों के

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

सह़ाबा की फ़ज़ीलत में तरतीब

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की शान के भी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

क्या कहने कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी उन की क़िस्मत पर रश्क फ़रमाते हैं, लेकिन इस का मत़लब येह नहीं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़ज़ाइल में उन से भी बढ़ गए, फ़ज़ाइल व मरातिब के ए'तिबार से मस्लके ह़क़ अहले सुन्नत व जमाअ़त के नज़्दीक जो तरतीब है उस का बयान करते हुए **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : तमाम सह़ाबए किराम आ'ला व अदना (और इन में अदना कोई नहीं) सब जन्नती हैं, बा'दे अम्बिया व मुर-सलीन, तमाम मख़्लूक़ाते इलाही इन्सो जिन्न व मलक (या'नी इन्सानों, जिन्नों और फ़िरिश्तों) से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अक्बर हैं, फिर उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म, फिर उ़स्माने ग़नी, फिर मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم, जो शख़्स **मौला अ़ली** کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को (ह़ज़रते सय्यिदुना) सिद्दीक़ या फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से अफ़्ज़ल बताए, गुमराह बद मज़हब है । ख़ु-लफ़ाए अर-बआ़ राशिदीन के बा'द बक़िय्यए अ़-श-रए मुबश्शरह व ह़ज़राते ह़-सनैन व अस्ह़ाबे बद्र व अस्ह़ाबे बै-अ़तुर्रिज़्वान (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) के लिये अफ़्ज़लिय्यत है और येह सब **क़त़ई जन्नती** हैं । अफ़्ज़ल के येह मा'ना हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां ज़ियादा इ़ज़्ज़त व मन्ज़िलत वाला हो, इसी को कस्रते सवाब से भी ता'बीर करते हैं । (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 241 ता 254)

मुस्त़फ़ा के सब सह़ाबा जन्नती हैं ला जरम
सब से राज़ी ह़क़ तआ़ला सब पे है उस का करम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़-श-रए मुबश्शरह के अस्माए गिरामी

ह़ज़रते मौला अ़ली मुश्किल कुशा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم **अ़-श-रए मुबश्शरह** में से भी हैं, **अ़-श-रए मुबश्शरह** उन दस सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को कहा जाता है जिन्हें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तरजुमान से ख़ुसूसी त़ौर पर जन्नती होने की बिशारत दी गई है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान, **अ़ली**, त़ल्ह़ा, ज़ुबैर, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, सा'द बिन अबी वक़्क़ास, सईद बिन ज़ैद और अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ **जन्नती** हैं।" (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) **(تِرْمِذِی ج٥ ص٤١٦ حديث ٣٧٦٨)**

वोह दसों जिन को जन्नत का मुज़्दा[1] मिला
उस मुबारक जमाअ़त पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

ख़ु-लफ़ाए राशिदीन की फ़ज़ीलत

फ़क़ीहे उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**اَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَاَبُوْبَكْرٍ اَسَاسُهَا وَعُمَرُ حِيْطَانُهَا وَعُثْمَانُ سَقْفُهَا وَعَلِيٌّ بَابُهَا**" या'नी मैं इ़ल्म का शहर हूं, **अबू बक्र** उस की बुन्याद, **उ़मर** उस की दीवार, **उ़स्मान** उस की छत और **अ़ली** उस का दरवाज़ा हैं।"

(مُسندُ الفردوس ج١ ص٤٣ حديث١٠٥)

1 : ख़ुश ख़बरी

तेरे चारों हमदम हैं यक जान यक दिल
अबू बक्र फ़ारूक़ उ़स्मां अ़ली है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मह़ब्बते अ़ली का तक़ाज़ा

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم के बा'द सब से बेहतर **अबू बक्र व उ़मर** हैं फिर फ़रमाया : "**لَا یَجْتَمِعُ حُبِّیْ وَبُغْضُ اَبِیْ بَکْرٍ وَّعُمَرَ فِیْ قَلْبِ مُؤْمِنٍ**" या'नी मेरी **मह़ब्बत** और (**शैख़ैने जलीलैन**) अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बुग़्ज़ किसी मोमिन के दिल में जम्अ़ नहीं हो सकता।"

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج۳ص۷۹ حدیث۳۹۲۰)

कभी भी प्यास न लगने का अनोखा राज़

जो लोग "दमादम मस्त क़लन्दर अ़ली दा पहला नम्बर" वाला न-ज़रिय्या रखते हैं, सख़्त ख़त़ा पर हैं, उन की फ़ह्माइश के लिये एक **ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत** पेश की जाती है, पढ़ें और **अल्लाह** तआ़ला तौफ़ीक़ बख़्शे तो क़बूले ह़क़ करें चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुह़म्मद **अ़ब्दुल्लाह** मुह्तदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने **ह़ज** की सआ़दत ह़ासिल की। ह़रम शरीफ़ में एक शख़्स के बारे में सुना कि येह पानी नहीं पीता ! मुझे बड़ा तअ़ज्जुब हुवा, मैं ने उस से मिल कर इस की वजह पूछी तो कहने लगा : मैं "ह़िल्ला" का बाशिन्दा हूं, एक रात मैं ने ख़्वाब में क़ियामत

का होशरुबा मन्ज़र देखा और शिद्दते प्यास से खुद को बेताब पाया और किसी त़रह़ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हौज़ मुबारक पर पहुंच गया, वहां ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे खुदा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को पाया, येह ह़ज़रात लोगों को पानी पिला रहे थे। मैं ह़ज़रते मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा क्यूं कि मुझे इन पर बड़ा नाज़ था, मैं इन से बहुत **मह़ब्बत** करता था और तीनों खु-लफ़ा से इन्हें अफ़्ज़ल जानता था, मगर येह क्या! आप کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने मुझ से चेहरए मुबारक ही फैर लिया! चूंकि प्यास बहुत ज़ियादा लगी थी मैं बारी बारी उन **तीन खु-लफ़ा** के पास भी गया, हर एक ने मुझ से ए'राज़ किया या'नी अपना मुबारक मुंह फैर लिया। इतने में मेरी नज़र **मदीने के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर पड़ी, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अन्वर में ह़ाज़िर हो कर मैं ने अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह!** मौला अ़ली ने मुझे पानी नहीं पिलाया, बल्कि अपना मुंह ही फैर लिया। इर्शाद हुवा : वोह तुम्हें पानी कैसे पिलाएं! तुम तो मेरे **सह़ाबा** से बुग़्ज़ रखते हो! येह सुन कर मुझे अपने अ़क़ीदे के ग़लत़ होने का यक़ीन हो गया और मैं ने बसद नदामत हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर **सच्ची तौबा** की, सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे एक **पियाला** इनायत फ़रमाया जो मैं ने पी लिया, फिर मेरी आंख खुल गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब से दस्ते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पियाला पिया है, मुझे बिल्कुल प्यास नहीं लगती। इस ख़्वाब के बा'द

मैं ने अपने अहलो इ़याल को तौबा की तल्क़ीन की उन में से जिन्हों ने तौबा कर के मस्लके अहले सुन्नत व जमाअ़त क़बूल किया मैं ने उन से मुरासिम (या'नी तअ़ल्लुक़ात) क़ाइम रखे, बाक़ियों से तोड़ डाले ।

(مُلَخَّص از مِصباحُ الظّلام ص٧٤)

जब दामने ह़ज़रत से हम हो गए वाबस्ता
दुन्या के सभी रिश्ते बेकार नज़र आए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से पता चलता है कि सच्चे मुसल्मान की पहचान येह है कि वोह तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अ़-ज़-मतो शान का दिल से मो'तरिफ़ होता है । अगर कोई शख़्स बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मह़ब्बत और बा'ज़ से बुग़्ज़ रखता है तो वोह सख़्त ग़-लती पर है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें तमाम सह़ाबए किराम व अहले बैते इ़ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से सच्ची **मह़ब्बत** व अ़क़ीदत इनायत फ़रमाए । इस पर इस्तिक़ामत बख़्शे और इसी उल्फ़त व इरादत की ह़ालत में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने **प्यारे ह़बीब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और **चार यार** का जवार (या'नी पड़ोस) इनायत फ़रमाए ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى الله تعالى عليه واله وسلَّم

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम
येह सब है आप ही की तो इनायत या रसूलल्लाह !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

मैं हूं सुन्नी, रहूं सुन्नी, मरूं सुन्नी मदीने में
बक़ीए पाक में बन जाए तुरबत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश, स. 184, 185)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़ली की ज़ियारत इ़बादत है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **192** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"सवानेहे करबला" सफ़ह़ा 74** पर सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ह़दीसे मुबा-रका नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है : ह़ुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अ़लिय्युल मुर्तज़ा** (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم) को देखना इ़बादत है ।

(مُستَدرَك ج٤ ص١١٨ حديث٤٧٣٧)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुर्दों से गुफ़्त-गू

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की अ़-ज़-मतो शान का एक रोशन पहलू येह भी है कि **अल्लाहु ग़फ़ूर** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم का अहले क़ुबूर से भी गुफ़्त-गू करना साबित है। चुनान्चे **ह़ज़रते सय्यिदुना** इमाम अ़ब्दुर्रह़मान **जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی

"**शर्हुस्सुदूर**" में नक़्ल करते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम **अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के हमराह क़ब्रिस्तान से गुज़रे, आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : "**اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ وَرَحْمَةُ الله**" या'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलामती और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो ।" और फ़रमाया ऐ क़ब्र वालो ! तुम अपनी ख़बर बताओगे या हम तुम्हें बताएं ? सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम ने क़ब्र से "**وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ**" की आवाज़ सुनी और कोई कहने वाला कह रहा था **: या अमीरल मुअमिनीन !** आप ही ख़बर दीजिये कि हमारे मरने के बा'द क्या हुवा ? ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : सुन लो ! तुम्हारे माल तक़्सीम हो गए, तुम्हारी बीवियों ने दूसरे निकाह़ कर लिये, तुम्हारी औलाद यतीमों में शामिल हो गई, जिस मकान को तुम ने बहुत मज़्बूत़ बनाया था उस में तुम्हारे दुश्मन आबाद हो गए । अब तुम अपना ह़ाल सुनाओ । येह सुन कर एक क़ब्र से आवाज़ आने लगी **: या अमीरल मुअमिनीन !** हमारे कफ़न फट कर तार तार हो गए, हमारे बाल झड़ कर **मुन्तशिर** हो गए, हमारी खालें टुकड़े टुकड़े हो गईं हमारी आंखें बह कर रुख़्सारों पर आ गईं और हमारे नथनों से पीप बह रही है और हम ने जो कुछ आगे भेजा (या'नी जैसे अ़मल किये) उसी को पाया, जो कुछ पीछे छोड़ा उस में नुक़्सान हुवा ।

(شَرْحُ الصُّدُور ص۲۰۹،ابن عَساكِر ج۲۷ ص۳۹۵)

आख़िरत की फ़िक्र करनी है ज़रूर ज़िन्दगी इक दिन गुज़रनी है ज़रूर
क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर
एक दिन मरना है आख़िर मौत है कर ले जो करना है आख़िर मौत है

इब्रत के म–दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की रिफ़्अ़त व अ़–ज़मत और कुव्वते समाअ़त की एक झलक देखने में आई कि आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने मुर्दों से उन के बरज़ख़ी ह़ालात पूछे, जवाबात सुने और उन्हें दुन्यवी ह़ालात इर्शाद फ़रमाए, यक़ीनन येह आप की अ़ज़ीमुश्शान **करामत** है। नीज़ इस रिवायत में हमारे लिये इब्रत के **म–दनी फूल** भी हैं कि जो शख़्स दुन्या में रहते हुए अपने अ़क़ाइदो आ'माल को न सुधारेगा, दुन्यवी ख़्वाहिशात के जाल में फंस कर आख़िरत से ग़ाफ़िल रहेगा उस की क़ब्र उस के लिये सख़्तियों का घर बनेगी और येह दुन्या की बे जा फ़िक्रें और ख़्वाहिशें उस के किसी काम न आएंगी बल्कि सिर्फ़ दुन्या का माल इकठ्ठा करने की फ़िक्र में लगा रहने वाला और फिर इसी ह़ाल में मर कर अंधेरी क़ब्र की सीढ़ी उतर जाने वाला अपने दुन्यवी माल से कोई फ़ाएदा न उठा पाएगा, लवाह़िक़ीन व वु–रसा उस के माल पर क़ब्ज़ा बल्कि ह़ुसूले माल के लिये झगड़ा कर के अपनी अपनी राह लेंगे और येह नादान इन्सान जम्ए माल की धुन में मस्त रहते हुए ह़लाल ह़राम की तमीज़ भुला बैठने और गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने की वजह से अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार क़रार पाएगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و اٰلہٖ وسلّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

दौलते दुन्या के पीछे तू न जा आख़िरत में माल का है काम क्या ?

माले दुन्या दो जहां में है वबाल काम आएगा न पेशे ज़ुल जलाल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मुस्तफ़ा की मौला मुश्किल कुशा पर अ़ताएं हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के जिस क़दर फ़ज़ाइलो कमालात आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाए वोह सब रसूले ख़ुदा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, क़ासिमे ने'मते हर दो-सरा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में हैं । हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم की ख़ुसूसी शफ़्क़तों और अ़ताओं के तुफ़ैल **अल्लाह तआ़ला** ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को वोह मक़ाम अ़ता फ़रमाया कि जिस पर आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के बा'द आने वाला हर शख़्स रश्क करता है । **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को अपना मह़बूब क़रार दे कर ऐसा मुमताज़ मक़ाम अ़ता फ़रमाया कि जिस तक कोई बड़े से बड़ा वली, क़ुत़्ब, ग़ौस, अब्दाल भी नहीं पहुंच सकता । **बहारे शरीअ़त**, जिल्द अव्वल, स. **253** पर है : "कोई वली कितने ही बड़े मर्तबे का हो किसी सह़ाबी के रुत्बे को नहीं पहुंच सकता ।"

वाह ! क्या बात है फ़ातेह़े ख़ैबर की

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم पर

शफ़्क़त व अ़ताए रसूले रह़मत صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم की अ़क्कासी करती हुई एक **ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे **ह़ज़रते सय्यिदुना** सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने ख़ैबर के दिन फ़रमाया : ''कल येह झन्डा मैं ऐसे शख़्स को दूंगा जिस के हाथ **अल्लाह तआला फ़त्ह़ देगा, वोह अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **से और उस के रसूल** (صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم) **से मह़ब्बत करता है नीज़ अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **और रसूल** (صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم) **उस से मह़ब्बत करते हैं।''** अगले रोज़ सुब्ह़ के वक़्त हर आदमी येही उम्मीद रखता था कि झन्डा उस को दिया जाएगा। फ़रमाया : अ़ली बिन अबी त़ालिब कहां हैं ? लोगों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم **!** उन की आंखें दुखती हैं। फ़रमाया : उन्हें बुलाओ। उन्हें लाया गया, तो मह़बूबे रब्बुल इ़बाद, राह़ते हर क़ल्बे नाशाद صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने उन كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की आंखों पर अपना लुआ़बे दहन (या'नी थूक शरीफ़) लगाया और दुआ़ फ़रमाई, वोह ऐसे अच्छे हो गए गोया उन्हें दर्द था ही नहीं और उन्हें झन्डा दे दिया। **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم **!** क्या मैं उन लोगों से उस वक़्त तक लड़ूं जब तक वोह हमारी त़रह़ मुसल्मान न हो जाएं ? आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नरमी इख़्तियार करो यहां तक कि उन के मैदान में उतर जाओ फिर उन्हें इस्लाम की दा'वत दो और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के

जो हुक़ूक़ जो उन पर लाज़िम हैं वोह उन्हें बताओ । ख़ुदा की क़सम ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख़्स को हिदायत अ़ता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास **सुर्ख़ ऊंट** हों ।

(بخاری ج۲ص۳۱۲حدیث۳۰۰۹، مُسلِم ص۱۳۱۱ حدیث ۲۴۰۶)

क़ुव्वते हैदरी की एक झलक

ग़ज़्वए ख़ैबर में एक यहूदी ने ह़ज़रते हैदरे कर्रार كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم पर वार किया, इसी दौरान आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ढाल गिर गई, तो आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم आगे बढ़ कर क़ल्ए के दरवाज़े तक पहुंच गए और अपने हाथों से क़ल्ए का फाटक उखाड़ दिया और किवाड़ को ढाल बना लिया, वोह किवाड़ आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के हाथ में बराबर रहा और आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم लड़ते रहे यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के हाथों ख़ैबर को फ़त्ह़ फ़रमाया । येह किवाड़ इतना वज़्नी था कि जंग के बा'द **40** आदमियों ने मिल कर उठाना चाहा तो वोह काम्याब न हुए । **(دَلَائِلُ النُّبُوَّةِ لِلْبَيْهَقِی ج٤ ص۲۱۲)**

आ'ला ह़ज़रत फ़रमाते हैं :

शेरे शमशीर ज़न शाहे ख़ैबर शिकन
पर-तवे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

किसी और ने भी क्या ख़ूब कहा है :

अ़ली हैदर ! तेरी शौकत तेरी सौलत का क्या कहना
कि ख़ुत़्बा पढ़ रहा है आज तक ख़ैबर का हर ज़र्रा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़ली जैसा कोई बहादुर नहीं

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का एक नुमायां तरीन वस्फ़ (या'नी ख़ूबी) शुजाअ़त व बहादुरी है और इस बहादुरी को ग़ैबी ताईद भी ह़ासिल है जैसा कि एक रिवायत में है : जब **अमीरुल मुअमिनीन,** ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم एक **ग़ज़्वे** में कुफ़्फ़ारे बद अत्वार को गाजर मूली की त़रह़ काट रहे थे तो ग़ैब से येह आवाज़ आई : **''لَا سَيْفَ اِلَّا ذُوالْفِقَارِ وَلَا فَتٰى اِلَّا عَلِيٌّ''** या'नी अ़ली जैसा कोई बहादुर नहीं और ज़ुल फ़िक़ार जैसी कोई तलवार नहीं।''

(جزء الحسن بن عرفة العبدی ص ٦٢ حدیث ٣٨ ماخوذاً)

हैं अ़ली मुश्किल कुशा साया कुनां सर पर मेरे
ला फ़ता इल्ला अ़ली, ला सै-फ़ इल्ला ज़ुल फ़िक़ार

(वसाइले बख़्शिश, स. 400)

लुआ़ब व दुआ़ए मुस्त़फ़ा की ब-र-कतें

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि सुल्त़ाने ज़मानो ज़मन, मह़बूबे रब्बे ज़ुल मिनन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का **लुआ़बे दहन** लगने के बा'द मेरी दोनों आंखें कभी न दुखीं। **(مسندامام احمدبن حنبل ج١ص١٦٩حدیث٥٧٩)** ह़ज़रते मौला **अ़ली** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم गर्मियों में गर्म कपड़े और सर्दियों में ठन्डे कपड़े पहनते थे, किसी ने वजह पूछी तो फ़रमाया कि जब **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी आंखों में अपने मुंह मुबारक से **लुआ़ब** लगाया तो साथ में येह

दुआ भी दी : "اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنْهُ الْحَرَّ وَالْبَرْدَ." या'नी ऐ **अल्लाह !** अ़ली से गर्मी और सर्दी दूर फ़रमा दे ।" उस दिन से मुझे न गर्मी लगती है और न ही सर्दी । **(ابن ماجه ج ١ص ٨٣ حديث ١١٧)**

इजाबत का सहरा इनायत का जोड़ा
दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

मौला अ़ली का इख़्लास

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मौलाए काएनात, मौला मुश्किल कुशा, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा,** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इस क़दर बहादुर होने के बा वुजूद तकब्बुर, रियाकारी और ख़ुद नुमाई वग़ैरा हर त़रह़ के रज़ाइल से पाक और पैकरे अ़-मलो इख़्लास थे जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा **अ़ली क़ारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने जिहाद में एक काफ़िर को पछाड़ा और उसे क़त्ल के इरादे से उस के सीने पर बैठे, उस ने आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم पर थूक दिया, आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने उसे छोड़ दिया, सीने से उठ गए । उस ने वजह पूछी तो आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया कि तेरी इस ह़-र-कत से मुझे ग़ुस्सा आ गया, अब तेरा क़त्ल नफ़्सानी वजह से होता न कि ईमानी वजह से, इस लिये मैं ने तुझे छोड़ दिया, वोह आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का **येह इख़्लास देख कर मुसल्मान हो गया ।"**

(مِرقاةُ المَفاتيح ج٧ ص١٢ تَحتَ الحديث٣٤٥١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ह़ैदरे कर्रार व साह़िबे ज़ुल फ़िक़ार **अमीरुल मुअमिनीन,** मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा,** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के **इख़्लास** की ब-र-कत से यहूदी को इस्लाम जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत नसीब हो गई, इसी त़रह़ हमारे दीगर अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام भी हमा वक़्त **अपने नेक आ'माल को जांचते** रहते कि येह अ़मल कहीं दूसरों को दिखाने के लिये तो नहीं ! अगर किसी नेक अ़मल में नफ़्सो शैत़ान की मुदा-ख़लत या रियाकारी का थोड़ा सा भी शाएबा मह़सूस फ़रमाते तो फ़ौरन उस से बचने बल्कि बसा अवक़ात तो उस अ़-मले सालेह़ हो दोबारा करने की तरकीब बनाते चुनान्चे

30 साल की नमाज़ें दोहराई

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْه **30** साल तक मस्जिद की पहली सफ़ में (बा जमाअ़त) नमाज़ अदा फ़रमाते रहे, एक बार उन को पहली सफ़ में जगह न मिली और दूसरी सफ़ में खड़े हो गए तो शर्म मह़सूस होने लगी कि लोग क्या कहेंगे कि देखो ! आज इस आदमी की पहली सफ़ छूट गई है। येह ख़याल आते ही आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْه संभल गए और अपने नफ़्स का मुह़ा-सबा करने लगे कि "ऐ नफ़्स ! मैं **30** साल तक जो नमाज़ें पहली सफ़ में अदा करता रहा क्या वोह लोगों को दिखाने के लिये थीं जो आज तुझे शर्म आ रही है !" चुनान्चे उन्हों ने पिछले **30** साल की नमाज़ें दोहराई और कमाले सिद्क़ो इख़्लास की नादिर मिसाल क़ाइम फ़रमाई। **(احیاء العلوم ج۲ص۳۰۲)** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दे हुस्ने अख़्लाक़ की दौलत कर दे अ़ता इख़्लास की ने'मत

मुझ को ख़ज़ाना दे तक़्वा का

या अल्लाह ! मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

तुम मुझ से हो

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के बारे में फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : ''**اَنْتَ مِنِّیْ وَاَنَا مِنْكَ** या'नी तुम मुझ से हो और मैं तुम से हूं।''

(تِرمِذی ج٥ ص٣٩٩ حدیث٣٧٣٦)

ऐ त़ल्अ़ते शह ! आ, तुझे मौला की क़सम ! आ

ऐ ज़ुल्मते दिल ! जा, तुझे उस रुख़ का ह़लफ़ जा

(ज़ौक़े ना'त)

या'नी ऐ मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के रुख़े ज़ैबा की रोशनी ! तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं कि मुझ पर अपनी तजल्ली डाल ! और ऐ मेरे दिल की तारीकी ! तुझे मौला मुश्किल कुशा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के चेह्‌रए अन्वर की क़सम ! मुझ से दूर हो जा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

तुम मेरे भाई हो

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने (**मदीनए**

मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में मुहाजिरीन और अन्सार) सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दरमियान भाईचारा क़ाइम फ़रमाया, तो हज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इस हालत में हाज़िर हुए कि आंखों से आंसू बह रहे थे, अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ने सहाबए किराम के दरमियान भाईचारा क़ाइम फ़रमाया, लेकिन मुझे किसी का भाई न बनाया ?" रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "**اَنْتَ اَخِیْ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ**" या'नी तुम दुन्या व आख़िरत में मेरे भाई हो।"

(ترمذی ج٥ ص٤٠١ حديث٣٧٤١)

शर्हे ह़दीस

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी तुम रिश्ते में भी मेरे चचाज़ाद भाई हो और अब इस अ़क़्दे मुआख़ात (या'नी भाईचारे के क़ौल व क़रार) में भी तुम को अपना भाई बनाया और दुन्या व आख़िरत में अपना भाई बनाया। (عَزَّوَجَلَّ) سُبْحٰنَ الله ! मगर ख़याल रहे कि इस के बा वुजूद कभी हज़रते सय्यिदुना अ़ली (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को भाई कह कर न पुकारा (जब कभी पुकारा) तो "**या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم)" कह कर (ही पुकारा), फिर किसी ऐरे ग़ैरे को भाई कहने का ह़क़ कैसे हो सकता है!

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 418)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शेरे ख़ुदा का इश्क़े मुस्तफ़ा

हज़रते सय्यिदुना **अलिय्युल मुर्तज़ा** کَرَّمَ اللہُ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से किसी ने सुवाल किया कि आप को **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कितनी **महब्बत** है ? फ़रमाया : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे नज़्दीक अपने माल व आल, वालिदैन और सख़्त प्यास के वक़्त ठन्डे पानी से भी बढ़ कर महबूब (या'नी प्यारे) हैं । **(اَلشِّفاء ج۲ ص۲۲)**

शेरे ख़ुदा की ख़ुदादाद ख़ूबियां

हज़रते सय्यिदुना अबी सालेह رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ से मरवी है, एक मर्तबा हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना ज़िरार رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ से फ़रमाया : "मेरे सामने हज़रते सय्यिदुना अली کَرَّمَ اللہُ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के औसाफ़ (या'नी ख़ूबियां) बयान कीजिये ।" हज़रते सय्यिदुना ज़िरार رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ ने अर्ज़ की : अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना **अलिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के इल्मो इरफ़ान का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता, आप کَرَّمَ اللہُ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ-मले और उस के दीन की हिमायत में मज़्बूत इरादे रखते, फ़ैसला कुन बात करते और इन्तिहाई अदलो इन्साफ़ से काम लेते, आप کَرَّمَ اللہُ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की ज़ात मम्बए इल्मो हिक्मत थी, जब कलाम (या'नी गुफ़्त-गू) करते तो द-हने मुबारक से हिक्मतो दानाई के फूल झड़ते, दुन्या और इस की रंगीनियों से वहशत खाते, रात के अंधेरे में (इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ से) मसरूर (ख़ुश) होते, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप کَرَّمَ اللہُ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم बहुत ज़ियादा रोने वाले, दूर अन्देश और ग़मज़दा थे, अपने नफ़्स

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنزالعمال)

का मुह़ा-सबा करते, खुर-दरा और मोटा लिबास पसन्द फ़रमाते और मोटी रोटी खाते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! रो'बो दबदबा ऐसा था कि हम में से हर एक आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से कलाम (या'नी बात) करते हुए डरता था, ह़ालां कि जब हम ह़ाज़िर होते तो मिलने में आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ख़ुद पहल करते और जब हम सुवाल करते तो जवाब इर्शाद फ़रमाते, और हमारी दा'वत क़बूल फ़रमाते। जब मुस्कुराते तो दन्दाने मुबारक ऐसे मा'लूम होते जैसे **मोतियों की लड़ी**, आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم परहेज़ गारों का एह़तिराम करते, मिस्कीनों से **महृब्बत** फ़रमाते, किसी त़ाक़त वर या साहि़बे सरवत (या'नी सरमाया दार) को उस की बात़िल (या'नी बेकार) आरज़ू में उम्मीद न दिलाते, कोई भी कमज़ोर शख़्स आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की अ़दालत से मायूस न होता बल्कि उसे उम्मीद होती कि मुझे यहां इन्साफ़ ज़रूर मिलेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने देखा कि जब रात आती तो आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم अपनी दाढ़ी मुबारक पकड़ कर ज़ारो क़ित़ार रोते और ज़ख़्मी शख़्स की त़रह़ तड़पते। मैं ने आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को येह फ़रमाते हुए सुना : "ऐ दुन्या ! आया तूने मुझ से मुंह मोड़ लिया है या अभी तक मेरी मुश्ताक़ (या'नी मेरा शौक़ रखती) है ? ऐ धोकेबाज़ दुन्या ! जा, तू किसी और को धोका दे, मैं तुझे तीन त़लाक़ें दे चुका हूं अब इस में हरगिज़ रुजूअ़ नहीं, तेरी उ़म्र बहुत कम और तेरी आसाइशें और ने'मतें इन्तिहाई ह़क़ीर हैं, और तेरे नुक़्सानात बहुत ज़ियादा हैं, हाए ! सफ़र (आख़िरत) निहायत त़वील है, ज़ादे राह बहुत क़लील (या'नी थोड़ा सा) और रास्ता इन्तिहाई ख़त़रनाक और पेचदार है।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की आंखों से आंसू बहने लगे ह़त्ता कि रीश (या'नी दाढ़ी) मुबारक

आंसूओं से तर हो गई और वहां मौजूद लोग भी ज़ारो क़ितार रोने लगे, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अबुल ह़सन (ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) पर रह़्म फ़रमाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह ऐसे ही थे।''

(عیونُ الحکایات ص۲۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मौला अ़ली मोमिनों के ''वली'' हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान, **मह़बूबे रह़मान** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : ''**اِنَّ عَلِيًّا مِّنِّیْ وَاَنَا مِنْهُ وَهُوَ وَلِیُّ کُلِّ مُؤْمِنٍ** या'नी अ़ली मुझ से हैं, मैं अ़ली से हूं और वोह हर मोमिन के **वली** हैं।'' **(تِرمِذی ج۵ص۴۹۸ حدیث۳۷۳۲)**

वासित़ा नबियों के सरवर का वासित़ा सिद्दीक़ और उ़मर का

वासित़ा उ़स्मानो ह़ैदर का

या अल्लाह ! मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 107)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

यहां ''वली'' से क्या मुराद है ?

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : यहां वली ब मा'ना ख़लीफ़ा नहीं बल्कि ब मा'ना दोस्त या ब मा'ना मददगार है, जैसे रब फ़रमाता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر)

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا (پ٦،المائدہ:٥٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारे दोस्त नहीं मगर **अल्लाह** और उस का रसूल और ईमान वाले।

वहां भी वली ब मा'ना मददगार है। "इस फ़रमान से दो मस्अले मा'लूम हुए, एक येह कि मुसीबत में "या अ़ली मदद" कहना जाइज़ है, क्यूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم हर मोमिन के मददगार हैं ता क़ियामत, दूसरे येह कि आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को "मौला अ़ली" कहना जाइज़ है, कि आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم हर मुसल्मान के वली और मौला हैं।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 417)

दुश्मन का ज़ोर बढ़ चला है या अ़ली मदद !
अब ज़ुल फ़िक़ारे ह़ैदरी फिर बे नियाम हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

या अ़ली मदद कहने के दलाइल जानने के लिये......

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "या अ़ली मदद" कहने के मस्अले की वज़ाह़त जानने और बहुत सारे वसाविस दूर करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से "**ग़ैरुल्लाह से मदद मांगने का सुबूत**" नामी **VCD** हदिय्यतन ह़ासिल कर के उसे मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये। नीज़ इसी रिसाले के सफ़ह़ा 56 ता 95 पर भी कु़रआनो ह़दीस की रोशनी में येह मस्अला वाज़ेह़ किया गया है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है । (عبدالرزاق)

अहले बैत से मह़ब्बत की फ़ज़ीलत

सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक रोज़ इमामे ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का हाथ पकड़ कर फ़रमाया : "जो मुझे दोस्त रखता है और साथ ही इन को और इन के वालिदैन को भी मह़बूब रखता है वोह बरोज़े क़ियामत मेरे साथ होगा ।" (مسند احمد بن حنبل ج۱ ص۱٦٨ حديث٥٧٦)

मुस्तफ़ा इ़ज़्ज़त बढ़ाने के लिये ता'ज़ीम दें
है बुलन्द इक़्बाल तेरा दूद-माने[1] अहले बैत

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिसे अहले बैत की **मह़ब्बत** मिल जाए उसे दोनों जहां की इ़ज़्ज़त मिल जाएगी, आख़िरत में रसूले रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त मुयस्सर आएगी और अहले बैत के सदक़े उस की बख़्शिश व **मग़्फ़िरत** हो जाएगी । اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

उन दो का सदक़ा जिन को कहा मेरे फूल हैं
कीजे रज़ा को ह़श्र में ख़न्दां मिसाले गुल

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ने फ़रमाया है : "اِنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَیْنَ ھُمَا رَیْحَانَتَایَ مِنَ الدُّنْیَا ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا दोनों मेरे फूल हैं ।" (ترمذی حدیث۳۷۹۵) इन ही दोनों जन्नती

مدینہ

1 : ख़ानदान

फूलों का सदक़ा ! अह़मद रज़ा को बरोज़े क़ियामत फूल की त़रह़ हंसता बसता रखना ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घरानए ह़ैदर की फ़ज़ीलत

ह़ज़राते ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا एक बार बीमार हो गए तो **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم व ह़ज़रते सय्यि-दतुना बीबी फ़ात़िमा और ख़ादिमा ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इन शहज़ादों رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की सिह़ह़त याबी के लिये **तीन रोज़ों** की मन्नत मानी । **अल्लाह** तआ़ला ने दोनों शहज़ादों رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाई, चुनान्चे तीन रोज़े रख लिये गए । **ह़ज़रते मौला अ़ली** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم **तीन साअ़** जव लाए । एक एक साअ़ (या'नी 4 किलो में से 160 ग्राम कम) तीनों दिन पकाया । जब इफ़्त़ार का वक़्त आया और तीनों रोज़ादारों के सामने रोटियां रखी गईं तो एक दिन **मिस्कीन**, एक दिन **यतीम** और एक दिन **क़ैदी** दरवाज़े पर ह़ाज़िर हो गए और रोटियों का सुवाल किया तो तीनों दिन सब रोटियां उन साइलों को दे दीं और सिर्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर के अगला रोज़ा रख लिया ।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1073 ब तसर्रुफ़)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

भूके रह के ख़ुद औरों को खिला देते थे
कैसे साबिर थे मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *के घराने वाले*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कुरआने करीम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **अमीरुल मुअमिनीन**, मौलाए काएनात, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के घराने के इस ईमान अफ़्रोज़ ईसार को इस त़रह़ बयान फ़रमाया है :

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ﴿٩﴾ (پ٢٩،الدھر:٨۔٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और खाना खिलाते हैं उस की **मह़ब्बत** पर मिस्कीन और यतीम और असीर (या'नी क़ैदी) को, उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास अल्लाह के लिये खाना देते हैं, तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते ।

तुम्हारी दाढ़ी ख़ून से सुर्ख़ कर देगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मैं और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم "**ग़ज़्वए ज़िल उ़शैरह**"[1] में थे कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, रसूले ग़ैबदान, सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम को उन दो शख़्सों के बारे में ख़बर न दूं जो लोगों में से सब से ज़ियादा बद बख़्त हैं ? हम ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم !" पस रसूले ज़ी वक़ार, ग़ैबों पर ख़बरदार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने

مدینه

1 : इस ग़ज़्वे की **सिन 2** हिजरी में मह़ज़ तय्यारी हुई थी, कुफ़्फ़ार से जिहाद की नौबत नहीं आई थी । (المواھب اللدنیة ج ۱ ص ۱۷٤)

(ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : ''﴾1﴿...... क़ौमे समूद का वोह शख़्स (या'नी क़दार बिन सालिफ़) जिस ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नबी (ह़ज़रते) सालेह़ (عَلَیْہِ السَّلام) की मुक़द्दस ऊंटनी की मुबारक टांगें काटी थीं और ﴾2﴿..... ऐ अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم) ! वोह शख़्स जो तुम्हारे सर पर तलवार मार कर **तुम्हारी दाढ़ी ख़ून से सुर्ख़ कर देगा** ।''

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج٦ص٣٦٥حدیث١٨٣٤٩ مُلَخَّصاً)

जिन का कौसर है जन्नत है अल्लाह की *जिन के ख़ादिम पे राफ़त है अल्लाह की*

दोस्त पर जिन के रह़मत है अल्लाह की *जिन के दुश्मन पे ला'नत है अल्लाह की*

उन सब अहले मह़ब्बत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तीन ख़ारिजिय्यों की तीन सह़ाबा के बारे में साज़िश

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **192** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''सवानेह़े करबला''** **सफ़ह़ा 76** ता **77** पर **सदरुल अफ़ाज़िल** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْهَادِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ख़्वारिज में से एक ना मुराद अ़ब्दुर्रह़मान **बिन मुल्जम** मुरादी ने बुरक बिन **अ़ब्दुल्लाह** तमीमी ख़ारिजी और अ़म्र बिन **बुकैर** तमीमी ख़ारिजी को मक्कतुल मुकर्रमा में जम्अ़ कर के मौलाए काएनात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया बिन अबी सुफ़्यान और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

के क़त्ल का मुआ़-हदा किया और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के क़त्ल के लिये **इब्ने मुल्जम** आमादा हुवा और एक तारीख़ मुअ़य्यन (या'नी तै़) कर ली गई।

इब्ने मुल्जम की बद बख़्ती का सबब इश्क़े मजाज़ी हुवा

"मुस्तदरक" में है कि **इब्ने मुल्जम** एक ख़ारिजिय्या औ़रत के इश्क़े मजाज़ी में गिरिफ़्तार हो गया था, उस ज़ालिमा ख़ारिजिय्या औ़रत ने शादी के लिये **महर** में **3** हज़ार दिरहम और **نَعُوْذُ بِاللّٰه** ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के क़त्ल का मुत़ा-लबा रखा था। **(مُستَدرَك ج٤ص١٢١حديث٤٧٤٤)** **इब्ने मुल्जम** कूफ़ा पहुंचा और वहां के ख़वारिज से मिला और उन्हें दरपर्दा अपने नापाक इरादे की इत्तिलाअ़ दी तो वोह उस के साथ **मुत्तफ़िक़** हो गए।

शहादत की रात

इस माहे **र-मज़ानुल मुबारक** (40 हि.) में आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का येह दस्तूर था कि एक शब ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ, एक शब ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और एक शब ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास इफ़्त़ार फ़रमाते और तीन लुक़्मों से ज़ियादा तनावुल न फ़रमाते और (कम खाने की वजह बयान करते हुए) इर्शाद फ़रमाते : मुझे येह अच्छा मा'लूम होता है कि "**अल्लाह तआ़ला** से मिलते वक़्त मेरा पेट ख़ाली हो।" **शहादत की रात** तो येह ह़ालत रही कि बार बार मकान से बाहर तशरीफ़ लाते और आस्मान की त़रफ़ देख कर फ़रमाते : ब ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कोई ख़बर झूटी नहीं दी

गई, येह वोही रात है जिस का वा'दा किया गया है। (गोया आप كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم को अपनी शहादत का पहले ही से इ़ल्म था।)

(सवानेहे़ करबला, स. 76, 77 मुलख़्ख़सन)

क़ातिलाना ह़म्ला

शबे जुमुआ़ 17 (या **19**) र-मज़ानुल मुबारक **40** सि.हि. को ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُمَا के वालिदे बुज़ुर्ग-वार, है़दरे कर्रार, साहि़बे ज़ुल फ़िक़ार अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم सह़र (या'नी सुब्ह़) के वक़्त बेदार हुए, मुअज़्ज़िन ने आ कर आवाज़ दी और कहा : **اَلصَّلٰوۃ اَلصَّلٰوۃ** ! चुनान्चे आप كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم नमाज़ पढ़ने के लिये घर से चले, रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये सदाएं देते और जगाते हुए मस्जिद की त़रफ़ तशरीफ़ लिये जा रहे थे कि अचानक **इब्ने मुल्जम** ख़ारिजी बद बख़्त ने आप كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم पर तलवार का एक ऐसा ज़ालिमाना वार किया कि जिस की शिद्दत से आप كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की पेशानी कन्पटी तक कट गई और तलवार दिमाग़ पर जा कर ठहरी। इतने में चारों त़रफ़ से लोग दौड़ कर आए और उस ख़ारिजी बद बख़्त को पकड़ लिया। इस अलम-नाक वाक़िए के **2** दिन बा'द आप كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم जामे शहादत नोश फ़रमा गए। **(تاریخ الخلفاء ص۱۳۹)** **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

इब्ने मुल्जम की लाश के टुकड़े नज़्रे आतश कर दिये गए

हज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन, सय्यिदुना इमामे हुसैन और सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُم ने आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को गुस्ल दिया, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और दारुल इमारत कूफ़ा में रात के वक़्त दफ़्न किया। लोगों ने **इब्ने मुल्जम** बद किरदार व बद अत़्वार के जिस्म के टुकड़े कर के एक टोकरे में रख कर आग लगा दी और वोह जल कर ख़ाकिस्तर हो गया। **(ایضاً)**

बा'दे मौत क़ातिले अ़ली की सज़ा की लरज़ा ख़ैज़ ह़िकायत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द दुवुम के **505** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल बाब "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" सफ़ह़ा **199** पर है **:** इस्मह **अ़ब्बादानी** कहते हैं **:** मैं किसी जंगल में घूम रहा था कि मैं ने एक गिर्जा देखा, गिर्जा में एक राहिब की ख़ानक़ाह थी उस के अन्दर मौजूद राहिब से मैं ने कहा कि तुम ने इस (वीरान) मक़ाम पर जो सब से अ़जीबो ग़रीब चीज़ देखी हो वोह मुझे बताओ ! तो उस ने बताया **:** मैं ने एक रोज़ यहां शुतर मुर्ग़ जैसा एक **देव हेकल सफ़ेद परन्दा** देखा, उस ने उस पथ्थर पर बैठ कर क़ै की, उस में से एक **इन्सानी सर** निकल पड़ा, वोह बराबर क़ै करता रहा और इन्सानी आ'ज़ा निकलते रहे और बिजली की सी सुरअ़त (या'नी फुरती) के साथ एक दूसरे से जुड़ते रहे यहां तक कि वोह **मुकम्मल आदमी** बन गया ! उस आदमी ने जूं ही उठने की कोशिश की उस

देव हेकल परन्दे ने उस के ठोंग मारी और उस को टुकड़े टुकड़े कर दिया, फिर निगल गया। कई रोज़ तक मैं येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देखता रहा, मेरा यक़ीन **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत पर बढ़ गया कि वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मार कर जिलाने पर क़ादिर है। एक दिन मैं उस **देव हेकल परन्दे** की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** हुवा और उस से दरयाफ़्त किया कि ऐ परन्दे ! मैं तुझे उस ज़ात की क़सम दे कर कहता हूं जिस ने तुझ को पैदा किया ! अब की बार जब वोह इन्सान मुकम्मल हो जाए तो उस को बाक़ी रहने देना ताकि मैं उस से उस का अ़मल मा'लूम कर सकूं ! तो उस परन्दे ने फ़सीह़ अ़-रबी में कहा : "मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के लिये ही बादशाहत और बक़ा है हर चीज़ फ़ानी है और वोही बाक़ी है मैं उस का एक फ़िरिश्ता हूं और इस शख़्स पर मुसल्लत़ किया गया हूं ताकि इस के गुनाह की सज़ा देता रहूं।" जब क़ै में वोह इन्सान निकला तो मैं ने उस से पूछा : ऐ अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करने वाले इन्सान ! तू कौन है और तेरा क़िस्सा क्या है ? उस ने जवाब दिया : "मैं (ह़ज़रते) **अ़ली** (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) का क़ातिल अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने **मुल्जम** हूं, जब मैं मर चुका तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने मेरी रूह़ ह़ाज़िर हुई, उस ने मेरा नामए आ'माल मुझ को दिया जिस में मेरी पैदाइश से ले कर ह़ज़रते अ़ली (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को शहीद करने तक की हर नेकी और बदी लिखी हुई थी। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस फ़िरिश्ते को हुक्म दिया कि वोह क़ियामत तक मुझे अ़ज़ाब दे।" येह कह कर वोह चुप हो गया और **देव हेकल परन्दे** ने उस पर ठोंगें मारीं और उस को निगल गया और चला गया। **(شَرْحُ الصُّدُور ص١٧٥)**

शह्वत की पैरवी का दर्दनाक अन्जाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मौला अ़ली, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के क़ातिल का जो कि ख़ारिजी बददीन व गुमराह था कैसा दर्दनाक अन्जाम हुवा ! वोह बद नसीब क्यूं इतना बड़ा गुनाह करने के लिये आमादा हुवा जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि वोह एक ख़ारिजिय्या औ़रत पर आ़शिक़ हो गया था उस ख़ारिजिय्या ने शादी का मह्र येह मुक़र्रर किया था कि तुम्हें ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) को शहीद करना पड़ेगा। **अफ़्सोस !** इ़श्क़े मजाज़ी में **इब्ने मुल्जम** अन्धा हो गया और उस ने ह़ज़रते मौला मुश्किल कुशा, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم जैसी अ़ज़ीम हस्ती को शहीद कर दिया, इस ना–बकार को वोह औ़रत तो ख़ाक मिलनी थी हाथों हाथ येह सज़ा मिली कि लोगों ने देखते ही देखते उसे पकड़ लिया, बिल आख़िर उस के बदन के टुकड़े टुकड़े कर के टोकरे में डाल कर आग लगा दी गई और वोह जल कर ख़ाकिस्तर हो गया ! और मरने के बा'द ता क़ियामत जारी रहने वाले उस के लरज़ा ख़ैज़ अ़ज़ाब का अभी आप ने तज़्किरा सुना। वोह बद बख़्त, न इधर का रहा न उधर का। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बिल्कुल सच फ़रमाया है कि **''शह्वत की घड़ी भर पैरवी त़वील ग़म का बाइ़स होती है।''**

(اَلزُّهدُ الكبير لِلْبَيْهَقِى ص١٥٧ حديث٣٤٤)

सह़ाबए किराम की शान

सह़ाबिये रसूले हाशिमी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : ''मेरे सह़ाबा को बुरा न कहो

क्यूं कि अगर तुम में से कोई उहुद (पहाड़) भर सोना ख़ैरात करे तब भी उन के न एक मुद को पहुंचे न आधे को ।" (بخاری ج۲ص۵۲۲حدیث۳۶۷۳)

जितने तारे हैं उस चर्खे़ ज़ी जाह के जिस क़दर माहपारे हैं उस माह के

जा नशीं हैं जो मर्दे हक़ आगाह के और जितने हैं शहज़ादे उस शाह के

उन सब अहले मकानत पे लाखों सलाम

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : "**4 मुद** का एक साअ़ होता है और एक साअ़ साढ़े चार सैर का, तो **मुद** एक सैर आध पाव हुवा, या'नी मेरा सह़ाबी क़रीबन **सवा सैर जव** ख़ैरात करे और उन के इ़लावा कोई मुसल्मान ख़्वाह ग़ौस व क़ुत़्ब हो या आ़म मुसल्मान पहाड़ भर सोना ख़ैरात करे तो उस का सोना क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ और क़बूलिय्यत में सह़ाबी के सवा सैर जव को नहीं पहुंच सकता, येह ही ह़ाल रोज़ा नमाज़ और सारी इ़बादात का है, जब **मस्जिदुन्-बवी** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नमाज़ दूसरी जगह की नमाज़ों से **50 हज़ार गुना** है तो जिन्हों ने ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब और दीदार पाया उन का क्या पूछना और उन की इ़बादात का क्या कहना ! इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि ह़ज़राते सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का ज़िक्र हमेशा ख़ैर से ही करना चाहिये, किसी सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को हलके लफ़्ज़ से याद न करो, येह ह़ज़रात वोह हैं जिन्हें रब عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की **सोह़बत** के लिये चुना, मेहरबान बाप अपने बेटे को बुरों की सोह़बत में नहीं रहने देता तो मेहरबान रब عَزَّوَجَلَّ अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बुरों की सोह़बत में रहना कैसे पसन्द फ़रमाता !"

रसूलुल्लाह तृय्यिब उन के सब साथी भी ताहिर हैं

चुनीदा बहरे पाकां हज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 8, स. 335)

म-दनी माहोल से वाबस्ता रहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तमाम सहाबए किराम और अहले बैते इज़ाम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن की हक़ीक़ी उल्फ़त व अक़ीदत की सआदत اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ अहले सुन्नत के हिस्से में आई। दीन पर इस्तिक़ामत पाने, सहाबा व अहले बैत عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان की **महब्बत** का जाम पीने पिलाने और औलियाए किराम का खुसूसी फ़ैज़ान पाने के लिये "दा'वते इस्लामी" के **म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता** रहिये कि इस म-दनी माहोल से वाबस्तगी दोनों जहानों में काम्याबी का ज़रीआ है। दा'वते इस्लामी के पुर बहार म-दनी माहोल में बिगड़े हुए अक़ाइदो आ'माल की नुहूसतों और गन्दगियों से छुटकारा मिलता और हक़ पर क़ाइम रहने का पुख़्ता ज़ेह्न बनता है। आप की तरग़ीब व तहरीस के लिये एक ईमान अफ़रोज़ **म-दनी बहार** पेश की जाती है चुनान्चे

बद अक़ी-दगी से तौबा

लतीफ़आबाद हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस तरह बताया : बा'ज़ लोगों की **सोहबत** में बैठने की बिना पर मेरा ज़ेह्न ख़राब हो गया और मैं तीन साल तक **नियाज़ शरीफ़** और **मीलाद शरीफ़** वग़ैरा पर घर में ए'तिराज़

करता रहा मुझे पहले **दुरूद शरीफ़** से बहुत **शग़फ़** था (या'नी बेह़द दिलचस्पी व रग़बत थी) मगर ग़लत़ **सोह़बत** के सबब **दुरूदे पाक** पढ़ने का जज़्बा ही दम तोड़ गया। इत्तिफ़ाक़ से एक बार मैं ने **दुरूद शरीफ़** की फ़ज़ीलत पढ़ी तो वोह जज़्बा दोबारा जागा और मैं ने कसरत के साथ **दुरूदे पाक** पढ़ने का मा'मूल बना लिया। एक रात जब **दुरूद शरीफ़** पढ़ते पढ़ते सो गया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे ख़्वाब में **सब्ज़ गुम्बद** का दीदार हो गया। और बे साख़्ता मेरी ज़बान से **اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللہ** जारी हो गया। सुब्ह़ जब उठा तो मेरे दिल के अन्दर हलचल मची हुई थी, मैं इस सोच में पड़ गया कि आख़िर ह़क़ का रास्ता कौन सा है? ह़ुस्ने इत्तिफ़ाक़ से **दा'वते इस्लामी** वाले आ़शिक़ाने रसूल का सुन्नतों की तरबिय्यत का **म-दनी क़ाफ़िला** हमारे घर की क़रीबी मस्जिद में आया तो किसी ने मुझे **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत दी, मैं चूंकि **मु-त-ज़बज़िब (Confused)** था इस लिये तलाशे ह़क़ के जज़्बे के तह़त **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। मैं ने सफ़ेद इमामा बांधा था मगर सब्ज़ इमामे वाले **म-दनी क़ाफ़िले** वालों ने सफ़र के दौरान मुझ पर न किसी क़िस्म की तन्क़ीद की न ही त़न्ज़ किया बल्कि अज्नबिय्यत ही मह़सूस न होने दी। **अमीरे क़ाफ़िला** ने **म-दनी इन्आ़मात** का तआ़रुफ़ करवाया और उस के मुत़ाबिक़ मा'मूल रखने का मश्वरा दिया। मैं ने **म-दनी इन्आ़मात** का बग़ौर मुत़ा-लआ़ किया तो चौंक उठा! क्यूं कि मैं ने इतने ज़बर दस्त तरबिय्यती **म-दनी फूल** ज़िन्दगी में पहली ही बार पढ़े थे। **आ़शिक़ाने रसूल** की **सोह़बत** और **म-दनी इन्आ़मात** की ब-र-कत से मुझ पर

रब्बे लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल हो गया। मैं ने म-दनी क़ाफ़िले के तमाम मुसाफ़िरों को जम्अ़ कर के ए'लान किया कि कल तक मैं बद अ़क़ीदा था आप सब गवाह हो जाइये कि आज से **तौबा** करता हूं और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता रहने की निय्यत करता हूं। इस्लामी भाइयों ने इस पर फ़रह़त व मसर्रत का इज़्हार किया। दूसरे दिन **30** रुपै की **नुक्ती** (एक बेसन की मिठाई जो मोती के दानों की त़रह़ बनी होती है) मंगवा कर मैं ने सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म शैख़ **अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی की नियाज़ दिलवाई और अपने हाथों से तक़्सीम की। मैं **35** साल से **सांस के मरज़** में मुब्तला था, कोई रात बिग़ैर तक्लीफ़ के न गुज़रती थी, नीज़ मेरी सीधी **दाढ़ में तक्लीफ़** थी जिस के बाइ़स सह़ीह़ त़रह़ खा भी नहीं सकता था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से दौराने सफ़र मुझे सांस की कोई तक्लीफ़ न हुई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं सीधी दाढ़ से बिग़ैर किसी तक्लीफ़ के खाना भी खा रहा हूं। मेरा दिल गवाही देता है कि **अ़क़ाइदे अहले सुन्नत** ह़क़ हैं और मेरा हुस्ने ज़न है कि **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में मक़्बूल है।

छाए गर शै-त़नत, तो करें देर मत क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो
सोह़बते बद में पड़, कर अ़क़ीदा बिगड़ गर गया हो चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ैरुल्लाह से मदद मांगने के बारे में सुवाल जवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा दूसरे से मदद मांगने के तअ़ल्लुक़ से **वस्वसों** का शिकार रहते हैं उन को समझाने की कोशिश का सवाब कमाने की अच्छी अच्छी निय्यतों से चन्द **सुवाल जवाब** पेश किये जाते हैं, अगर एक बार पढ़ने से तसल्ली न हो तो तीन बार पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन्शिराहे सद्र होगा या'नी सीना खुल जाएगा, बात दिल में उतर जाएगी, **वस्वसे दूर होंगे** और इत्मीनाने क़ल्ब नसीब होगा।

ह़ज़रते अ़ली को मुश्किल कुशा कहना कैसा है ?

सुवाल (1) : ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को **मुश्किल कुशा** कहना कैसा है ? क्या सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही मुश्किल कुशा नहीं ?

जवाब : मुश्किल कुशा के मा'ना हैं : "मुश्किल ह़ल करने वाला, मुश्किल में मदद करने वाला।" बेशक ह़क़ीक़ी मा'नों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही **मुश्किल कुशा** है, मगर उस की अ़त़ा से अम्बिया, सह़ाबा और औलिया बल्कि आ़म बन्दे भी **मुश्किल कुशा** और मददगार हो सकते हैं इस की आ़म फ़ह्म मिसाल येह है कि पाकिस्तान में जा बजा येह बोर्ड लगे हुए हैं **"मददगार पोलीस फ़ोन नम्बर 15"** हर एक येह जानता है कि पोलीस चोरों डाकूओं वग़ैरा से बचाने, दुश्मनों के ख़त़रों और दीगर मुश्किल मौक़ओं पर **मुश्किल कुशाई** या'नी मदद करने की सलाहि़य्यत रखती है। **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से

हिजरत कर के जो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا पहुंचे, वहां उन की नुसरत (या'नी मदद) करने वाले सहाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان **"अन्सार"** कहलाए और अन्सार के मा'ना **मददगार** हैं । इस के इ़लावा भी बे शुमार मिसालें दी जा सकती हैं तो जब पोलीस मुश्किल कुशा, समाजी कारकुन ह़ाजत रवा, चोकीदार मददगार और क़ाज़ी फ़रियाद रस हो सकता है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم क्यूं **मुश्किल कुशा** नहीं हो सकते !

कह दे कोई घेरा है बलाओं ने ह़सन को
ऐ शेरे ख़ुदा बहरे मदद तैग़ बकफ़ जा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"मौला अ़ली" कहना कैसा ?

सुवाल (2) : मौलाना ! मुआ़फ़ कीजिये, अभी आप ने "मौला अ़ली" कहा, ह़ालां कि "मौला" तो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की ज़ात है ।

जवाब : बेशक ह़क़ीक़ी मा'नों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही "मौला" है मगर मजाज़न (या'नी ग़ैर ह़क़ीक़ी) मा'नों में दूसरे को "मौला" कहने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं । आज कल उ़-लमाए किराम बल्कि उ़मूमन हर दाढ़ी वाले को **मौलाना** कह कर मुख़ात़ब किया जाता है, कभी आप ने "मौलाना" के मा'ना पर भी ग़ौर फ़रमाया ? अगर नहीं तो सुन लीजिये, मौलाना के मा'ना हैं : "हमारा मौला" देखिये ! सुवाल में भी तो "मौलाना" कहा गया है ! जब आ़म शख़्स को भी मौलाना या'नी "हमारा मौला" कहने में कोई **वस्वसा**

नहीं आता तो आख़िर "मौला अ़ली" कहने में क्यूं वस्वसा आ रहा है ! اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط पढ़ कर शैतान को भगा दीजिये और तसल्ली रखिये कि "मौला अ़ली" कहने में कोई ह़रज नहीं बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के "मौला" होने की तो ह़दीसे पाक में सराह़त मौजूद है चुनान्चे सुनिये और "हुब्बे अ़ली" में सर धुनिये :

जिस का मैं मौला हूं उस के अ़ली भी मौला हैं

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : **مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ** या'नी जिस का मैं मौला हूं अ़ली भी उस के मौला हैं। **(ترمذی ج٥ص٣٩٨حدیث٣٧٣٣)**

"मौला अ़ली" के मा'ना

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ "जिस का मैं मौला हूं अ़ली भी उस के मौला हैं" के तह़त फ़रमाते हैं : **मौला** के बहुत (से) मा'ना हैं : दोस्त, मददगार, आज़ाद शुदा ग़ुलाम, (ग़ुलाम को) आज़ाद करने वाला मौला। इस (ह़दीसे पाक में मौला) के मा'ना ख़लीफ़ा या बादशाह नहीं यहां (मौला) ब मा'ना दोस्त (और) मह़बूब है या ब मा'ना **मददगार** और वाक़ेई ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم मुसल्मानों के दोस्त भी हैं, मददगार भी, इस लिये आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को "**मौला अ़ली**" कहते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 425) क़ुरआने करीम में **अल्लाह तआ़ला**,

जिब्रीले अमीन और नेक मुअमिनीन को ''मौला'' कहा गया है। चुनान्चे पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** आयत नम्बर 4 में रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है **:**

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِیْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक **अल्लाह** उन का मददगार है और जिब्रील और नेक ईमान वाले।

कहा जिस ने या ग़ौस अग़िस्नी तो दम में
हर आई मुसीबत टली ग़ौसे आ'ज़म

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक ''मौला'' के मा'ना

सुवाल (3) : आप ने मौला के मा'ना ''मददगार'' लिखे हैं क्या दीगर मुफ़स्सिरीन का भी इस से इत्तिफ़ाक़ है ?

जवाब : क्यूं नहीं। **मु-तअ़द्दिद** तफ़ासीर के ह़वाले दिये जा सकते हैं नमू-नतन 6 कुतुबे तफ़्सीर के नाम मुला-ह़ज़ा हों जिन में इस आयते मुबा-रका में वारिद लफ़्ज़ ''मौला'' के मा'ना **वली** और **नासिर** (या'नी मददगार) लिखे हैं **:** (1) तफ़्सीरे त़-बरी, जिल्द 12 सफ़ह़ा 154 (2) तफ़्सीरे क़ुरतुबी, जिल्द 18 सफ़ह़ा 143 (3) तफ़्सीरे कबीर, जिल्द 10 सफ़ह़ा 570 (4) तफ़्सीरे बग़वी, जिल्द 4 सफ़ह़ा 337 (5) तफ़्सीरे ख़ाज़िन, जिल्द 4 सफ़ह़ा 286 (6) तफ़्सीरे नस्फ़ी, सफ़ह़ा 1257। उन चार किताबों के नाम भी ह़ाज़िर हैं जिन में आयते मुबा-रका के लफ़्ज़ ''**मौला**'' के मा'ना **नासिर** (या'नी मददगार) किये गए हैं **:** (1) तफ़्सीरे जलालैन,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

सफ़हा 465 (2) तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी, जिल्द 28 सफ़हा 481 (3) तफ़्सीरे बैज़ावी, जिल्द 5 सफ़हा 356 (4) तफ़्सीरे अबी सुऊ़द, जिल्द 5 सफ़हा 738 ।

या ख़ुदा बहरे जनाबे मुस्तफ़ा इमदाद कुन

या रसूलल्लाह अज़ बहरे ख़ुदा इमदाद कुन

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ" की बेहतरीन तशरीह़

सुवाल (4) : सू-रतुल फ़ातिह़ा में है : "اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ या'नी हम तुझी से मदद मांगते हैं।" लिहाज़ा किसी और से मदद मांगना शिर्क हुवा ?

जवाब : मज़्कूरा आयते करीमा में मदद से मुराद ह़क़ीक़ी मदद है या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ह़क़ीक़ी कारसाज़ समझ कर अ़र्ज़ किया जा रहा है : ऐ रब्बे करीम ! "हम तुझी से मदद मांगते हैं" रहा बन्दों से मदद मांगना तो वोह मह़ज़ वासित़ए फ़ैज़े इलाही समझ कर है । जैसा कि पारह 12 **सूरए यूसुफ़** आयत नम्बर 40 में है : اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** हुक्म नहीं मगर **अल्लाह** का) या पारह 3 **सू-रतुल ब-क़रह** आयत नम्बर 255 में फ़रमाया : لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में) फिर हम ह़ुक्काम को **ह़कम** (या'नी फ़ैसला करने वाला) भी मानते हैं और अपनी चीज़ों पर मिल्किय्यत का दा'वा भी करते हैं या'नी आयत से मुराद है **ह़क़ीक़ी ह़कम** (या'नी फ़ैसला करने वाला) और ह़क़ीक़ी मिल्किय्यत, मगर बन्दों के लिये ब अ़त़ाए इलाही । (जाअल ह़क़, स. 215)

कई मक़ामात पर क़ुरआने करीम ने **ग़ैरुल्लाह** को मददगार क़रार दिया है, इस ज़िम्न में 4 आयाते मुबा-रका मुला-हज़ा हों :

(1) وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ (پ۱،البقرہ:٤٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो।

क्या सब्र ख़ुदा है ? जिस से इस्तिआ़नत (या'नी मदद मांगने) का हुक्म हुवा है। क्या नमाज़ ख़ुदा है ? जिस से इस्तिआ़नत (या'नी त़-लबे इमदाद) को इर्शाद किया है। दूसरी आयत में फ़रमाता है :

(2) وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ (پ٦،المائدہ:٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो।

अगर ग़ैरे ख़ुदा से मदद लेनी मुत़्लक़न मुह़ाल (या'नी हर सूरत में ना मुम्किन) है तो इस (आयते मुबा-रका में इर्शाद कर्दा) हुक्मे इलाही का ह़ासिल क्या ?

(3) اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿۵۵﴾ (پ٦،المائدہ:٥٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारे दोस्त नहीं मगर **अल्लाह** और उस का रसूल और ईमान वाले कि नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और **अल्लाह** के हुज़ूर झुके हुए हैं।

(4) وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ (پ١٠،التوبہ:٧١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मान मर्द और मुसल्मान औ़रतें आपस में एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلیٰ)

इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर येह की गई है : "और बाहम दीनी **मह़ब्बत** व मुवालात रखते हैं और एक दूसरे के मुईन व मददगार हैं।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 10, अत्तौबह : 71) सह़ीह़ इस्लामी अ़क़ीदे के मुत़ाबिक़ अगर कोई शख़्स येह अ़क़ीदा रखते हुए अम्बियाए किराम और औलियाए किराम से मदद त़लब करे कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इजाज़त के बिग़ैर ब ज़ाते ख़ुद नफ़्अ़ व नुक़्सान के मालिक हैं तो येह यक़ीनन शिर्क है जब कि इस के बर अ़क्स अगर कोई शख़्स ह़क़ीक़ी मददगार और नफ़्अ़ व नुक़्सान का ह़क़ीक़ी मालिक **अल्लाह तआ़ला** को मान कर किसी को मजाज़न (या'नी ग़ैर ह़क़ीक़ी त़ौर पर) और मह़्ज़ अ़त़ाए इलाही से मददगार समझते हुए मदद चाहे तो हरगिज़ शिर्क नहीं और येही हमारा अ़क़ीदा है।

बहर ह़ाल सू-रतुल फ़ातिह़ा की आयते मुबा-रका ("اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ" या'नी हम तुझी से मदद चाहें) ह़क़ है, मगर शैत़ान का बुरा हो कि येह लोगों को वस्वसे डाल कर ग़लत़ फ़ह्मियों का शिकार कर देता है। ग़ौर फ़रमाइये ! आयते मुबा-रका में ज़िन्दा मुर्दा वग़ैरा की तख़्सीस किये बिग़ैर मुत़्लक़न या'नी हर ह़ाल में **अल्लाह तआ़ला** के सिवा दूसरे से मदद मांगने की नफ़ी या'नी इन्कार किया गया है। आयते मुबा-रका के ज़ाहिरी व लफ़्ज़ी मा'ना के ए'तिबार से जो कि "अहले वस्वसा" ने समझा है कोई दूसरा तो ठीक येह ख़ुद भी "शिर्क" से नहीं बच सकते म-सलन वज़्न-दार गठरी ज़मीन पर रखी है उठा नहीं पा रहे, किसी को आवाज़ दे कर कहा : "बराए मेहरबानी ! उठाने में ज़रा मेरी मदद कर दीजिये ताकि सर पर रख लूं।" इस वस्वसे के मुत़ाबिक़ येह **शिर्क** हुवा या नहीं ? ज़रूर हुवा। इस त़रह़ की हज़ारों मिसालें दी जा सकती हैं, बस चारों त़रफ़ ग़ैरे ख़ुदा की इमदादों के नज़्ज़ारे हैं। म-सलन इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह या'नी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का ब कसरत जगहों पर अस्ल मुद्दआ़ ही

"बाहमी इमदाद" है ! इस में स-दक़ा व ख़ैरात, फ़ित्रा व ज़कात, मसाजिद व मदारिस के लिये चन्दा व अ़तिय्यात, क़ुरबानी की खालों के मुता़-लबात, समाजी इदारात, वग़ैरा वग़ैरा सब का मफ़ाद इमदाद, इमदाद और इमदाद ही तो है ! मज़ीद आगे बढ़िये तो मज़्लूमों की मदद के लिये अ़दालत है तो मरीज़ों की इमदाद के लिये ति़बाबत, अन्दरूने मुल्क के बाशिन्दों की मदद के लिये पोलीस की निज़ामत है तो बैरूनी दुश्मनों से हि़फ़ाज़त के लिये फ़ौजी ता़क़त, औलाद की परवरिश में मदद के लिये मां बाप की ज़रूरत है तो इन की ता'लीमो तरबिय्यत के लिये ता'लीम गाह की ह़ाजत । **अल ग़रज़** जि़न्दगी में क़दम क़दम पर **ग़ैरुल्लाह** की मदद व हि़मायत की ज़रूरत है बल्कि मरने के बा'द भी तक्फ़ीन व तदफ़ीन बिग़ैर **ग़ैरुल्लाह** की मदद के मुम्किन नहीं, फिर ता क़ियामत ईसाले सवाब के ज़रीए मदद की ह़ाजत है और आख़िरत में भी सब से अहम मदद की ज़रूरत है या'नी प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त । येह सब **ग़ैरुल्लाह** की मददें ही हैं :

आज ले इन की पनाह आज मदद मांग इन से
फिर न मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ैरे ख़ुदा से मदद मांगने की अह़ादीसे मुबा-रका में तरग़ीब

सुवाल (5) : ग़ैरुल्लाह से मदद मांगने की तरग़ीब पर कुछ अह़ादीसे मुबा-रका भी बयान कर दीजिये ।

जवाब : ग़ैरे ख़ुदा से मदद मांगने की तरग़ीब से मु-तअ़ल्लिक़ **दो फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **मुला-ह़ज़ा हों :**

﴾1﴿ मेरे रह़्म दिल उम्मतियों से ह़ाजतें मांगो रिज़्क़ पाओगे ।

﴾2﴿ "भलाई और अपनी ह़ाजतें अच्छे चेहरे वालों से मांगो ।" (اَلْجامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطی ص٧٢ حديث ١١٠٦) (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج١١ ص٦٧ حديث ١١١١٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : फ़ज़्ल मेरे रह़्म दिल बन्दों से मांगो उन के दामन में आराम से रहोगे कि मैं ने अपनी रह़मत उन में रखी है ।

(مسندُ الشّهاب ج١ ص٤٠٦ حديث ٧٠٠)

नाबीना को आंखें मिल गई

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन ह़ुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक **नाबीना** सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिये कि मुझे आ़फ़िय्यत दे । इर्शाद फ़रमाया : "अगर तू चाहे तो दुआ़ करूं और चाहे सब्र कर और येह तेरे लिये बेहतर है ।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : ह़ुज़ूर ! दुआ़ फ़रमा दीजिये । उन्हें ह़ुक्म फ़रमाया कि वुज़ू करो और अच्छा वुज़ू करो और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ اَتَوَسَّلُ وَاَتَوَجَّهُ اِلَیْکَ بِنَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ نَّبِیِّ الرَّحْمَةِ ط یَامُحَمَّدُ[1] اِنِّیْ تَوَجَّهْتُ بِکَ اِلٰی رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ هٰذِهٖ لِتُقْضٰی لِیْ ط اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ ط

ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तवस्सुल (या'नी वसीला पेश) करता हूं और तेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह होता हूं तेरे नबी **मुह़म्मद** (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) के ज़रीए़ से जो नबिय्ये रह़मत हैं । **या मुह़म्मद** (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं

1 : इस दुआ़ का वज़ीफ़ा करते वक़्त "या मुह़म्मद" صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कहने के बजाए "**या रसूलल्लाह**" صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कहना है । इस के दलाइल फ़तावा र-ज़विय्या जि. 30 रिसाला "**तजल्लियुल यक़ीन**" सफ़ह़ा 156 ता 157 पर मुला-ह़ज़ा कीजिये ।

हुज़ूर के ज़रीए से अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ अपनी ह़ाजत के बारे में मु-तवज्जेह होता हूं ताकि मेरी ह़ाजत पूरी हो । **या अल्लाह !** इन की शफ़ाअ़त मेरे ह़क़ में क़बूल फ़रमा । **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **''ख़ुदा** (عَزَّوَجَلَّ) **क़सम ! हम उठने भी न पाए थे, बातें ही कर रहे थे कि वोह हमारे पास आए गोया कभी नाबीना ही नहीं थे !''** (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 685,

(ابنِ ماجه ج ٢ ص ١٥٦ حديث ١٣٨٥، ترمذی ج٥ ص ٣٣٦ حدیث ٣٥٨٩، اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج ٩ ص ٣٠ حديث ٨٣١١

"या रसूलल्लाह" वाली दुआ़ की ब-र-कत से काम बन गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे मुबा-रका से दूर से **''या रसूलल्लाह''** कहने की इजाज़त साबित होती है क्यूं कि उन सह़ाबी ने अलग से किसी कोने में जा कर चुपके चुपके ही **''या रसूलल्लाह''** पुकारा है ! और ह़क़ येह है कि येह इजाज़त उस ''नाबीना सह़ाबी'' के लिये मख़्सूस न थी बल्कि बा'दे वफ़ाते ज़ाहिरी ता क़ियामे क़ियामत इस की ब-र-कतें मौजूद हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्मान बिन हुनैफ़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अमीरुल मुअमिनीन, जामिउ़ल क़ुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ज़मानए ख़िलाफ़त में येही दुआ़ एक साह़िबे ह़ाजत को बताई । ''त़-बरानी'' में है : एक शख़्स अपनी किसी ज़रूरत को ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्मान बिन हुनैफ़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : वुज़ू करो फिर मस्जिद में दो रक्अ़त नमाज़ अदा करो फिर येह दुआ़ मांगो : (यहां वोही दुआ़ बताई जो अभी ह़दीसे पाक में सफ़्ह़ा 64 पर गुज़री) और (फ़रमाया : इस दुआ़ के

आख़िरी लफ़्ज़) حَــاجَتِیْ की जगह अपनी ह़ाजत का नाम लेना । वोह आदमी चला गया और जैसा उस को कहा गया था उस ने वैसा ही किया और उस की ह़ाजत पूरी हो गई । (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج۹ ص۳۰ حدیث۸۳۱۱ مُلَخَّصاً)

बा'दे वफ़ात आक़ा ने मदद फ़रमाई

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के मोह़तरम उस्ताद ह़ज़रते इमाम इब्ने अबी शैबा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में क़ह़त़ साली हुई, एक साह़िब हु़ज़ूरे अन्वर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अत़्हर पर ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अपनी उम्मत के लिये बारिश त़लब फ़रमाइये, कि लोग हलाक हो रहे हैं ।" जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन साह़िब के ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर इर्शाद फ़रमाया : उ़मर के पास जा कर मेरा सलाम कहो और उन को ख़बर दो कि बारिश होगी । (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبہ ج ۷ ص ۴۸۲ حدیث۳۵ مختصراً) वोह साह़िब सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने फ़रमाया : येह रिवायत इमाम इब्ने अबी शैबा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सह़ीह़ अस्नाद के साथ बयान की है । (فَتحُ الباری ج ۳ ص ۴۳۰ تَحتَ الحدیث ۱۰۱۰)

ग़मो आलाम का मारा हूं आक़ा बे सहारा हूं

मेरी आसान हो हर एक मुश्किल या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश, स. 134)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐ अल्लाह के बन्दो ! मेरी मदद करो

सुवाल (6) : अगर कोई शख़्स जंगल बियाबान के अन्दर मुश्किल में फंस जाए तो नजात के लिये क्या करे ?

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगे कि ह़क़ीक़त में वोही ह़ाजत रवा और मुश्किल कुशा है नीज़ ह़ुस्ने ए'तिक़ाद के साथ सरवरे काएनात صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची ता'लीमात पर अ़मल करे । ऐसे मौक़अ़ के लिये क्या ता'लीमात हैं वोह भी मुला-ह़ज़ा हों चुनान्चे नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : जब तुम में से किसी की कोई चीज़ गुम हो जाए या राह भूल जाए और मदद चाहे और ऐसी जगह हो जहां कोई हमदम (या'नी यार व मददगार) नहीं तो उसे चाहिये यूं पुकारे : "يَاعِبَادَاللّٰہِ اَغِیْثُوْنِیْ، یَاعِبَادَاللّٰہِ اَغِیْثُوْنِیْ" ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दो ! मेरी मदद करो, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दो ! मेरी मदद करो ।" कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के कुछ बन्दे हैं जिन्हें येह नहीं देखता ।

(اَلمُعجَم الكَبِير ج١٧ ص١١٧ حديث ٢٩٠)

करोड़ों ह़-नफ़िय्यों के एक पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی बयान कर्दा ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : बा'ज़ सिक़ह (या'नी क़ाबिले ए'तिमाद) उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फ़रमाया है कि येह ह़दीसे पाक **ह़सन** है और मुसाफ़िरों को इस की ज़रूरत पड़ती है, और मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से मरवी है कि येह **अम्र मुजर्रब** (या'नी तजरिबा शुदा) है । **(مِرقاةُ المَفاتيح ج٥ ص٢٩٥)**

जंगल में जानवर भाग जाए तो......

ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, साहिबे कुरआने मुबीन, **मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन**, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जब तुम में से किसी एक की सुवारी (का जानवर) वीरान ज़मीन में भाग जाए तो यूं पुकारे : "**يَا عِبَادَ اللّٰهِ! اِحْبِسُوْا، يَا عِبَادَ اللّٰهِ! اِحْبِسُوْا**" या'नी ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दो ! रोक दो, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दो ! रोक दो।" **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के कुछ बन्दे रोकने वाले हैं जो उसे रोक देंगे।

(مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج٤ ص٤٣٨ حدیث٥٢٤٧)

जब उस्तादे मोह़तरम की सुवारी भाग गई !

शारेहे़ मुस्लिम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मेरे एक उस्ताज़े मोह़तरम जो कि बहुत बड़े आ़लिम थे, एक मर्तबा रेगिस्तान में उन की **सुवारी भाग गई**, उन को इस ह़दीसे पाक का इ़ल्म था, उन्हों ने येह कलिमात कहे (या'नी दो बार कहा : **يَا عِبَادَ اللّٰهِ! اِحْبِسُوْا** : या'नी ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! उसे रोक दो) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस सुवारी को उसी वक़्त रोक दिया।

(الاذکار ص١٨١)

आप जैसा पीर होते क्या ग़रज़ दर दर फिरूं
आप से सब कुछ मिला या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"अल्लाह के बन्दों" से मुराद कौन लोग हैं ?

सुवाल (7) : जंगल में बन्दगाने ख़ुदा से मदद मांगने की जो तरग़ीब दी गई है यहां **अल्लाह** के बन्दों से मुराद कौन लोग हैं ?

जवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی ह़िस्ने ह़सीन की शर्ह़, "**अल ह़िर्ज़ुस्समीन**" सफ़ह़ा 254 पर फ़रमाते हैं : "(यहां) बन्दों से या तो फ़िरिश्ते या मुसल्मान जिन्न या रिजालुल ग़ैब या'नी अब्दाल मुराद हैं।"

बे यारो मददगार जिन्हें कोई न पूछे

ऐसों का तुझे यारो मददगार बनाया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

मुर्दे से मदद क्यूं मांगें ?

सुवाल (8) : मान लिया कि ज़िन्दा एक दूसरे की मदद कर सकते हैं जंगल में बन्दों को पुकारना भी समझ में आ गया कि जंगल में तो आज कल पोलीस की मोबाइल भी मदद के लिये बसा अवक़ात दस्त-याब हो जाती है अगर्चे ह़दीसे पाक में पोलीस मुराद नहीं ताहम आदमी इन से मदद तो ह़ासिल कर सकता है और मोबाइल फ़ोन के ज़रीए भी किसी को मदद के लिये बुला सकता है। मगर "मुर्दे" से कैसे मदद मांगी जाए ?

जवाब : जो वाक़ेई मुर्दा हो उस से बेशक मदद न मांगी जाए मगर

अम्बिया व औलिया तो पर्दा फ़रमाने के बा'द भी ज़िन्दा होते हैं और यूं हम ज़िन्दों ही से मदद मांगते हैं। येह ह़ज़रात ज़िन्दा होते हैं इन के दलाइल मुला-ह़ज़ा हों :

अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ज़िन्दा हैं

अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام पर **मह़ज़** एक आन मौत त़ारी होती है फिर फ़ौरन उन को वैसी ही ह़यात या'नी ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमा दी जाती है, जैसी दुन्या में थी । अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की ह़यात (आ़लमे बरज़ख़ की ज़िन्दगी) रूह़ानी, जिस्मानी, दुन्यावी है, (येह ह़ज़राते अम्बिया) बि ऐनिही उसी त़रह़ ज़िन्दा होते हैं, जिस त़रह़ दुन्या में थे । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 545) **सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा** صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : **اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَـاْ کُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُّرْزَقُ** या'नी **अल्लाह तआ़ला** ने **अम्बिया** के अज्साम (या'नी जिस्मों) को मिट्टी पर ह़राम फ़रमा दिया है, **अल्लाह** के नबी ज़िन्दा रहते हैं उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है । **(ابن ماجہ ج۲ص۲۹۱ حدیث۱۶۳۷)** मा'लूम हुवा, अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام **ज़िन्दा** हैं नीज़ सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका से येह भी साबित है कि **ह़ज** अदा फ़रमाते और अपने अपने मज़ारों में **नमाज़ें** भी पढ़ते हैं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **اَلْاَنْبِیَاءُ اَحْیَاءٌ فِی قُبُوْرِهِمْ یُصَلُّوْنَ** या'नी अम्बिया अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं, नमाज़ पढ़ते हैं । **(مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج۳ ص۲۱۶ حدیث۳۴۱۲)**

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "येह ह़दीस **सह़ीह़** है ।" (فیضُ القدیرج۳ص۲۳۹) उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلام फ़रमाते हैं कि बा'ज़ अवक़ात इन्सान मुकल्लफ़ (पाबन्द) नहीं होता फिर भी लुत्फ़ अन्दोज़ होने के लिये आ'माल अदा करता है, जैसा कि **अम्बियाए किराम** عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام का अपनी मुबारक क़ब्रों में नमाज़ पढ़ना ह़ालां कि (सिर्फ़ दुन्या दारुल अ़मल है) आख़िरत दारुल अ़मल (नेकियां करने की जगह) नहीं ।

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلام मज़ार में नमाज़ पढ़ रहे थे

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शबे मे'राज (ह़ज़रते) मूसा (عَلَیْہِ السَّلام) के पास से हमारा गुज़र हुवा वोह सुर्ख़ टीले के पास अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे थे । **(مُسلم ص۱۲۹۳ حدیث ۲۳۷٤)**

अम्बिया को भी अजल आनी है मगर ऐसी कि फ़क़त् "आनी" है
फिर उसी आन के बा'द उन की ह़यात मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है
रूह़ तो सब की है ज़िन्दा उन का
जिस्मे पुरनूर भी रूह़ानी है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औलियाउल्लाह भी ज़िन्दा हैं

क़ुरआने करीम से साबित है कि शु-हदाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلام ज़िन्दा हैं न उन को मुर्दा कहो और न ही समझो । चुनान्चे इर्शाद होता है :

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ (پ۲، البقرة:۱۵۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वोह ज़िन्दा हैं, हां तुम्हें ख़बर नहीं।

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : जब येह ज़िन्दा हुए तो इन से मदद ह़ासिल करना (भी) जाइज़ हुवा। जो ह़ज़रात इश्क़े इलाही की तलवार से मक़्तूल हुए (या'नी क़त्ल किये गए) वोह भी इस में दाख़िल हैं। इसी लिये ह़दीसे पाक में आया कि जो डूब कर मरे, जल जावे, त़ाऊ़न (PLAGUE) में मरे, औ़रत ज़चगी की ह़ालत में मरे। त़ालिबे इ़ल्मे (दीन), मुसाफ़िर वग़ैरा सब **शहीद** हैं। (जाअल ह़क़, स. 218) आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **"फ़तावा र-ज़विय्या"** जिल्द 29 **सफ़ह़ा** 545 पर फ़रमाते हैं : "औलियाए किराम बा'दे वफ़ात ज़िन्दा हैं, मगर न मिस्ले अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (क्यूं कि) अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ह़यात "रूह़ानी, जिस्मानी, दुन्यावी" है, (येह ह़ज़राते अम्बिया) बिल्कुल उसी त़रह़ ज़िन्दा होते हैं, जिस त़रह़ दुन्या में थे, और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की ह़यात इन से कम और शु-हदा से ज़ाइद, जिन के बारे में क़ुरआने अ़ज़ीम में फ़रमाया : "इन (या'नी शहीदों) को मुर्दा मत कहो वोह ज़िन्दा हैं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 545) **मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन,**

ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इर्शाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली इस दारे फ़ानी (या'नी ख़त्म हो जाने वाली दुन्या) से दारे बक़ा (या'नी बाक़ी रहने वाले जहान) की त़रफ़ मुन्तक़िल (TRANSFAR) हो जाते हैं, वोह अपने परवर दगार (عَزَّوَجَلَّ) के पास ज़िन्दा हैं, उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है और खुश व खुर्रम हैं लेकिन लोगों को इस का शुऊ़र (समझ) नहीं। (اشعۃ اللّمعات ج۳ ص۴۲۳مُلَخَّصاً)

ह़ज़रते अ़ल्लामा **अ़ली क़ारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने इर्शाद फ़रमाया : لَا فَرْقَ لَھُمْ فِی الْحَالَیْنِ وَلِذَا قِیْلَ اَوْلِیَاءُ اللّٰہِ لَا یَمُوْتُوْنَ وَلٰکِنْ یَّنْتَقِلُوْنَ مِنْ دَارٍ اِلٰی دَارٍ ''या'नी औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की दोनों ह़ालतों (या'नी ज़िन्दगी और मौत) में अस्लन फ़र्क़ नहीं, इसी लिये कहा गया है कि वोह मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर तशरीफ़ ले जाते हैं।''

(مِرقاۃُ المفاتیح للقاری ج ۳ ص۴۵۹)

औलिया हैं कौन कहता मर गए
''फ़ानी घर'' से निकले ''बाक़ी घर'' गए

ह़याते अम्बिया और ह़याते औलिया में फ़र्क़

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने एक सुवाल का जवाब देते हुए फ़रमाया : अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ह़याते बर-ज़ख़िय्या (या'नी बरज़ख़ की ज़िन्दगी), ह़याते ह़क़ीक़ी ह़िस्सी दुन्यावी है, इन पर तस्दीक़े वा'दए इलाहिय्यह के लिये **मह़्ज़** एक आन को मौत त़ारी होती है फिर फ़ौरन उन को वैसे ही ह़यात अ़त़ा फ़रमा दी जाती है।

इस ह़यात पर वोही अह़कामे दुन्यविय्या हैं, इन का तर्का (या'नी विर्सा) बांटा न जाएगा, इन की अज़्वाज को निकाह़ ह़राम नीज़ अज़्वाजे मुत़ह्हरात पर इद्दत नहीं, वोह अपनी क़ुबूर में खाते पीते नमाज़ पढ़ते हैं । उ़-लमा व शु-हदा की ह़याते बर-ज़ख़िय्या (या'नी बरज़ख़ की ज़िन्दगी) अगर्चे ह़याते दुन्यविय्या (या'नी दुन्यवी ज़िन्दगी) से अफ़्ज़लो आ'ला है मगर इस पर अह़कामे दुन्यविय्या जारी नहीं और इन का तर्का (या'नी विर्सा) तक़्सीम होगा, इन की अज़्वाज (या'नी बीवियां) इद्दत करेंगी ।

(मुलख़्ख़स अज़ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 361)

मय्यित की इमदाद क़वी तर है

मज़्कूरा दलाइल से जब येह साबित हो गया कि अम्बिया व औलिया عَلَيْهِمُ السَّلَام وَ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى अपने मज़ारात में ह़यात हैं, तो जिस दलील के साथ उन से उन की ह़याते ज़ाहिरी में मदद त़लब करना **जाइज़** है बिल्कुल उसी दलील के बाइ़स दुन्या से पर्दा फ़रमा जाने के बा'द भी **जाइज़ व दुरुस्त** है । चुनान्चे **मुह़क़्क़िक़ अ़लल इ़त़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन**, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी ह़-नफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं कि ह़ज़रते **सय्यिदुना** अह़मद बिन मरज़ूक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقُدُّوس फ़रमाते हैं : "एक दिन शैख़ अबुल अ़ब्बास **ह़ज़्रमी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی ने मुझ से दरयाफ़्त किया कि "ज़िन्दा की इमदाद ज़ियादा क़वी है या मय्यित की ?" मैं ने कहा कि "कुछ लोग कहते हैं कि ज़िन्दा की इमदाद ज़ियादा क़वी (या'नी मज़्बूत़) है और मैं कहता हूं कि **मय्यित की इमदाद क़वी तर** (या'नी ज़ियादा मज़्बूत़) **है ।**" शैख़ ने फ़रमाया : "हां, येह बात दुरुस्त है क्यूं कि वफ़ात याफ़्ता बुज़ुर्ग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस के हां होते हैं ।" **(اشعة اللمعات ج۱ ص۷٦۲)**

ग़ैरुल्लाह से मदद मांगने के मु-तअ़ल्लिक़ शाफ़ेई मुफ़्ती का फ़तवा

शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना **शहाब रमली** अन्सारी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (**मु-तवफ़्फ़ा** 1004 सि.हि.) से फ़तवा त़लब किया गया : (या सय्यिदी येह इर्शाद फ़रमाइये :) "आ़म लोग जो सख़्तियों (या'नी मुसीबतों) के वक़्त म-सलन "**या शैख़ फ़ुलां !**" कह कर पुकारते हैं और अम्बियाए किराम व औलियाए इ़ज़ाम عَلَيْهِمُ السَّلَام وَ رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से फ़रियाद करते हैं, इस का शर-अ़ शरीफ़ में क्या हुक्म है ? आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **फ़तवा** दिया : "अम्बिया व मुर-सलीन व औलिया व उ़-लमा व सालिह़ीन عَلَيْهِمُ السَّلَام وَ رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن से इन के विसाल (या'नी इन्तिक़ाल) शरीफ़ के बा'द भी इस्तिआ़नत व इस्तिम्दाद (या'नी मदद त़लब करना) **जाइज़** है।" (فتاوی رملی ج٤ص٧٣٣)

मर्हूम नौ जवान ने मुस्कुरा कर कहा कि......

इमाम आ़रिफ़ बिल्लाह उस्ताज़ अबुल क़ासिम क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मशहूर **वलिय्युल्लाह** ह़ज़रते अबू सई़द **ख़र्राज़** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में एक नौ जवान को "**बाबे बनी शैबा**" पर फ़ौत शुदा पड़ा पाया। अचानक वोह मुझे देख कर मुस्कुराया और कहा : "**يَا اَبَا سَعِيْدٍ! اَمَا عَلِمْتَ اَنَّ الْاَحِبَّاءَ اَحْيَاءٌ وَّاِنْ مَّاتُوْا وَاِنَّمَا يُنْقَلُوْنَ مِنْ دَارٍ اِلٰى دَارٍ**" या'नी ऐ अबू सई़द ! क्या आप नहीं जानते कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब (प्यारे) बन्दे ज़िन्दा हैं, अगर्चे वोह फ़ौत हो जाएं, मुआ-मला तो सिर्फ़ इतना है कि वोह तो एक घर से दूसरे घर की त़रफ़ **मुन्तक़िल** किये जाते हैं।"

(رسالہ قشیریہ ص٣٤١)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का हर प्यारा ज़िन्दा है

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! **वलिय्युल्लाह** की बा'दे वफ़ात वाली ह़यात भी क्या ख़ूब है ! कि औलिया की शान भी बयान कर दी और देखने वाले का नाम भी बता दिया ! इसी से मिलती जुलती एक और **ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने एक फ़क़ीर को क़ब्र में उतारा, जब कफ़न खोला और उस का सर ख़ाक पर रखा ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की ग़ुरबत पर रह़्म फ़रमाए, तो उस ने अपनी आंखें खोल दीं और मुझ से फ़रमाया : "ऐ अबू अ़ली ! आप मुझे उस के सामने ज़लील करते हैं जो कि मेरे नाज़ उठाता है !" मैं ने संभल कर कहा : या सय्यिदी (या'नी ऐ मेरे सरदार !) क्या मौत के बा'द भी ज़िन्दगी है ? उस ने जवाब दिया : "بَلٰی اَنَا حَیٌّ وَّ کُلُّ مُحِبٍّ لِلّٰہِ حَیٌّ۔ या'नी हां क्यूं नहीं, मैं ज़िन्दा हूं और ख़ुदा का हर मह़बूब (या'नी प्यारा बन्दा) ज़िन्दा है ।"

(شرحُ الصّدور ص۲۰۸)

औलिया किस ने कहा कि मर गए
क़ैद से छूटे वोह अपने घर गए

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सुवाल (9) : मैं ह़-नफ़ी हूं, येह बता दीजिये क्या मेरे इमाम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी कभी ग़ैरुल्लाह से मदद मांगी है ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

जवाब : क्यूं नहीं। **करोड़ों** ह़-नफ़िय्यों के पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **अबू ह़नीफ़ा** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में मदद की दर-ख़्वास्त करते हुए ''क़सीदए नो'मान'' में अ़र्ज़ करते हैं :

يَا اَكْرَمَ الثَّقَلَيْنِ يَا كَنْزَ الْوَرٰى　　جُدْ لِيْ بِجُوْدِكَ وَاَرْضِنِيْ بِرِضَاكَ

اَنَا طَامِعٌ بِالْجُوْدِ مِنْكَ لَمْ يَكُنْ　　لِاَبِيْ حَنِيْفَةَ فِي الْاَنَامِ سِوَاكَ

या'नी ऐ जिन्नो इन्स से बेहतर और ने'मते इलाही عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ाने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो आप को इनायत फ़रमाया है उस में से मुझे भी अ़त़ा फ़रमाइये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को जो राज़ी किया है आप मुझे भी राज़ी फ़रमाइये। मैं आप की सख़ावत का उम्मीद वार हूं, आप के सिवा **अबू ह़नीफ़ा** का मख़्लूक़ में कोई नहीं। (قصیدۂ نعمانیہ مع الخیرات الحسان ص ٢٠٠)

पड़े मुझ पर न कुछ उफ़्ताद या ग़ौस
मदद पर हो तेरी इमदाद या ग़ौस

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''या अ़ली मदद'' कहने का सुबूत

सुवाल (10) : ''या अ़ली मदद'' कहने की सराह़त के साथ अगर दलील मिल जाए तो मदीना मदीना।

जवाब : पिछले सफ़ह़ात पर ग़ैरे ख़ुदा से उस की ज़ाहिरी ह़यात और बा'दे ममात मदद मांगने के दलाइल गुज़रे। ताहम सरा-ह़तन ''या अ़ली मदद'' कहने की दलील भी मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 9 **सफ़ह़ा** 821 ता 822 पर लिखते हैं : "शाह मुह़म्मद ग़ौस ग्वालियारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की किताब **"जवाहिरे ख़म्सा"** जिस के वज़ाइफ़ की जय्यिद व बुज़ुर्ग औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السّلام ने इजाज़तें दीं जिन में **शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिस देहलवी** भी शामिल हैं, इस किताब में है, "**نادِ علی** ہفت بار یا سہ بار یا یک بار بخواند و آں ایں است ۔" या'नी सात बार, या तीन बार, या एक बार **नादे अ़ली** पढ़े, और वोह येह है : **نَادِ عَلِیًّا مَّظْھَرَ الْعَجَائِبِ تَجِدْہُ عَوْنًا لَّکَ فِی النَّوَائِبِ کُلُّ ھَمٍّ وَّغَمٍّ سَیَنْجَلِیْ بِوِلَایَتِکَ یَاعَلِیُّ یَاعَلِیُّ یَاعَلِیُّ** तरजमा : ह़ज़रते अ़ली को पुकार जो अ़जाइब के मज़्हर हैं उन्हें तमाम मुसीबतों में अपना मददगार पाएगा, हर रन्जो ग़म दूर हो जाएगा, आप کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की विलायत से, **या अ़ली, या अ़ली, या अ़ली ।**

(जवाहिरे ख़म्सा मुतर्जम, स. 282, 453)

अगर "या अ़ली" कहना शिर्क हो तो......

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर मौला अ़ली को मुश्किल कुशा मानना, मुसीबत के वक़्त मददगार जानना, हंगामे (या'नी वक़्ते) ग़म व तक्लीफ़ उस जनाब को निदा करना, **या अ़ली या अ़ली** का दम भरना शिर्क हो तो **مَعَاذَاللّٰہ** येह सारे औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السّلام कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन ठहरें, और सब से बढ़ कर भारी मुश्रिक **कट्टर** काफ़िर **عِیاذًا بِاللّٰہ** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह) **शाह वलिय्युल्लाह** हों जो मुश्रिकों को औलियाउल्लाह जानते...... **اَلْعِیَاذُ بِاللّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْحَقِّ الْمُبِیْن** मुसल्मान देखें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

कि **या अ़ली या अ़ली** (कहने) को शिर्क ठहराने की क्या सज़ा मिली ! न नाह़क़ मुसल्मानों को मुश्रिक कहते न अगलों पिछलों के मुश्रिक बनने की मुसीबत सहते, इस से येही बेहतर कि राहे रास्त पर आएं, सच्चे मुसल्मानों को मुश्रिक न बनाएं वरना अपनों के ईमान की फ़िक्र फ़रमाएं।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 821, 822 मुलख़्ख़सन)

सख़्त दुश्मन है ह़सन की ताक में

अल मदद मह़बूबे यज़्दां अल ग़ियास

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

"या ग़ौस" कहने का सुबूत

सुवाल (11) : क्या इसी त़रह़ "**या ग़ौस**" कहने का सुबूत भी मिल सकता है ?

जवाब : क्यूं नहीं। यूं तो काफ़ी दलाइल गुज़रे, सराह़त भी ह़ाज़िर है, चुनान्चे मश्हूरो मा'रूफ़ ह़-नफ़ी आ़लिम ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی नक़्ल करते हैं : ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : "जो कोई रन्जो ग़म में मुझ से **मदद** मांगे तो उस का रन्जो ग़म दूर होगा और जो सख़्ती के वक़्त मेरा नाम ले कर **मुझे पुकारे** तो वोह शिद्दत दफ़्अ़ होगी और जो किसी ह़ाजत में रब्बुल इ़ज़्ज़त की त़रफ़ मुझे वसीला बनाए तो उस की ह़ाजत पूरी होगी।" ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ली क़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی मज़ीद लिखते हैं : ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक **नमाज़े ग़ौसिया** की तरकीब बताते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं कि दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में **सू-रतुल फ़ातिह़ा** के बा'द

11, 11 बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़े, सलाम फैर कर 11 मर्तबा सलातो सलाम (म-सलन اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ) पढ़े फिर **बग़दाद** की त़रफ़ (पाक व हिन्द में जानिबे शिमाल) 11 क़दम चले हर क़दम पर मेरा नाम ले कर अपनी ह़ाजत अ़र्ज़ करे और येह दो शे'र पढ़े :

اَیُدْرِکُنِیْ ضَیْمٌ وَاَنْتَ ذَخِیْرَتِیْ   وَاُظْلَمُ فِی الدُّنْیَا وَ اَنْتَ نَصِیْرِیْ

وَعَارٌ عَلٰی حَامِی الْحِمٰی وَھُوَمُنْجِدِیْ   اِذَا ضَاعَ فِی الْبَیْدَاءِ عِقَالُ بَعِیْرِیْ

क्या मुझ पर ज़ुल्म किया जाएगा ? जब कि आप मेरा सरमाया हैं और क्या दुन्या में मुझ पर सितम किया जाएगा ? जब कि आप मेरे मददगार हैं । **ग़ौसे पाक** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पुश्त पनाह होते हुए अगर जंगल में मेरे ऊंट की रस्सी गुम हो जाए, तो येह बात मुह़ाफ़िज़ के लिये बाइसे आ़र है ।

येह कह कर ह़ज़रते मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : وَقَدْ جُرِّبَ ذٰلِکَ مِرَاراً فَصَحَّ या'नी बारहा इस **नमाज़े ग़ौसिया** का तजरिबा किया गया, दुरुस्त निकला । (نزھۃُ الخاطر ص ٦١)

हुस्ने निय्यत हो ख़त़ा तो कभी करता ही नहीं
आज़्माया है यगाना है "दोगाना" तेरा

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ुज़ूरे **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم मुसल्मानों को ता'लीम देते हैं कि मुसीबत के वक़्त मुझ से मदद मांगो और ह़-नफ़िय्यों के मो'तबर आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی इसे बिग़ैर तरदीद नक़्ल कर के फ़रमाते हैं कि "इस का तजरिबा किया गया, बिल्कुल सह़ीह़ है ।" मा'लूम हुवा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

कि बुज़ुर्गों से बा'दे वफ़ात मदद मांगना न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि फ़ाएदा मन्द भी है। (जाअल ह़क़, स. 207)

ग़ौसे पाक के तीन ईमान अफ़रोज़ इर्शादात

मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने "अख़्बारुल अख़्यार" में सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के जो मुबारक अक़्वाल नक़्ल फ़रमाए हैं उन में से तीन मुला-ह़ज़ा हों : **﴾1﴿** मेरे मुरीद का पर्दए इफ़्फ़त अगर मशरिक़ में खुल रहा हो और मैं चाहे मग़रिब में हुवा जब भी उस की पर्दा पोशी करूंगा **﴾2﴿** मैं ता क़ियामत अपने मुरीदों की दस्त गीरी (या'नी इमदाद) करता रहूंगा अगर्चे वोह सुवारी से गिरे **﴾3﴿** जो किसी सख़्ती (मुश्किल) में मुझे पुकारे (या'नी अल मदद या ग़ौस कहे) उसे कुशा-दगी ह़ासिल हो (या'नी मुश्किल ह़ल हो)। (اخبارُالاخیار ص ۱۹)

क़सम है कि मुश्किल को मुश्किल न पाया
कहा हम ने जिस वक़्त "या ग़ौसे आ'ज़म"

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुवाल (12) : शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى तो अ़-रबी व फ़ारसी बोलते थे, मुख़्तलिफ़ बोलियों म-सलन उर्दू, अंग्रेज़ी, पश्तो, पंजाबी वग़ैरा ज़बान में मदद के लिये पुकारने पर वोह किस त़रह़ मदद फ़रमाएंगे ?

जवाब : कोई औ़रत अपने शोहर को चाहे किसी भी ज़बान में सताए उस की ज़ौजा बनने वाली जन्नती हूर समझ लेती है। चुनान्चे

जन्नती हूर का दूसरी ज़बानें समझ लेना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब कोई औ़रत अपने शोहर को दुन्या में सताती है तो उस की बीवी से जन्नती हूर कहती है : **لَا تُؤْذِيْهِ قَاتَلَكِ اللّٰهُ فَاِنَّمَا هُوَ عِنْدَكِ دَخِيْلٌ يُوْشِكُ اَنْ يُّفَارِقَكِ اِلَيْنَا.** या'नी **अल्लाह** तुझे ग़ारत करे इसे तक्लीफ़ न पहुंचा वोह तेरे पास चन्द दिन का मेहमान है अ़न्क़रीब वोह तुझ से जुदा हो कर हमारे पास आने वाला है। **(ترمذی ج۲ص۳۹۲ حدیث ۱۱۷۷)** जब हूर दूसरी ज़बान समझ सकती है तो औलिया के सरदार सरकारे गौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم वफ़ात के बा'द दूसरी ज़बानें क्यूं नहीं समझ सकते !

ह़दीसे पाक की ईमान अफ़रोज़ शर्ह़

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त मिरआत जिल्द 5 सफ़ह़ा 98 पर फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए, **एक** येह कि हूरें नूरानी होने की वजह से जन्नत में ज़मीन के वाक़िआ़त देखती हैं, देखो येह लड़ाई हो रही है किसी घर की बन्द कोठरी में और हूर देख रही है ! यहां (साह़िबे) मिरक़ात (ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى) ने फ़रमाया कि मलाए आ'ला दुन्या वालों के एक एक अ़मल पर ख़बरदार हैं। **दूसरे** येह कि हूरों को लोगों के अन्जाम की ख़बर है कि फुलां मोमिन मुत्तक़ी मरेगा। (जभी तो कहती है, अ़न्क़रीब तुझे छोड़ कर हमारे पास आएगा) **तीसरे** येह कि हूरों को लोगों के मक़ाम की ख़बर कि बा'दे क़ियामत येह जन्नत के फुलां द-रजे में रहेगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (كنزالعمال)

चौथे येह कि हूरें आज भी अपने ख़ाविन्द इन्सानों को जानती पहचानती है, **पांचवां** येह कि आज भी हूरों को हमारे दुख से दुख पहुंचता है, हमारे मुख़ालिफ़ से नाराज़ होती हैं। जब हूरों के इ़ल्म का येह ह़ाल है तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जो तमाम ख़ल्क़ से बड़े आ़लिम हैं उन के इ़ल्म का क्या पूछना! मुफ़्ती साहिब आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : **छटे** येह कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत के ह़ालात (और) हूरों के कलाम से ख़बरदार हैं मगर येह कलाम वोह ही हूर करती है जिस का ज़ौज (या'नी शोहर) उस घर में हो। या'नी तिरमिज़ी में येह ह़दीस ग़रीब है इब्ने माजह की रिवायत में नहीं मगर येह ग़राबत मुज़िर नहीं, क्यूं कि इस ह़दीस की ताईद क़ुरआने करीम से हो रही है। रब तआ़ला फ़िरिश्तों के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाता है :

يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۱۲﴾ (الانفطار:١٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कि जानते हैं जो कुछ तुम करो।

और इब्लीस व ज़ुर्रिय्यते इब्लीस के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाता है :

اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ (پ٨، الاعراف:٢٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह और उस का कुम्बा तुम्हें वहां से देखते हैं कि तुम उन्हें नहीं देखते।

जब ह़दीस की ताईद क़ुरआने मजीद से हो जाए तो "ज़ईफ़" भी "**क़वी**" हो जाती है। (मिरआत, जि. 5, स. 98) बहर कैफ़ आ़लमे आख़िरत के मुआ़-मलात वह्बी (या'नी **अल्लाह तआ़ला** की त़रफ़ से अ़त़ा कर्दा) और ख़िलाफ़े आ़दत हैं इन्हें इस दुन्या के मुआ़-मलात पर क़ियास नहीं किया जा सकता। या'नी जो उमूर दुन्या में कस्बी (कोशिश से ह़ासिल किये जाते) हैं वोह वहां मह़ज़ वह्बी हो जाते हैं।

ह़ज़रते अ़ल्लामा **अ़ली क़ारी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : **لِاَنَّ اُمُوْرَ الْاٰخِرَةِ مَبْنِیَّةٌ عَلٰی خَرْقِ الْعَادَةِ ـ** या'नी क्यूं कि आख़िरत के मुआ़-मलात ख़िलाफ़े आ़दत पर मब्नी हैं। (**مرقاة ج١ ص٣٥٤ تحت الحديث١٣١**)

रास्ता पुरख़ार, मन्ज़िल दूर, बन सुनसान है

अल मदद ऐ रहनुमा ! या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

(वसाइले बख़्शिश, स. 522)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जब अल्लाह मदद कर सकता है तो दूसरे से मदद क्यूं मांगें ?

सुवाल (13) : उस के बारे में आप क्या कहेंगे जो यूं ज़ेह्न बना कर सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से मदद मांगा करे कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मदद पर क़ादिर है तो फिर **एह़तियात़** इसी में है कि सिर्फ़ उसी से मदद मांगी जाए।

जवाब : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मदद पर क़ादिर है और कारसाज़े ह़क़ीक़ी भी वोही है, अगर कोई सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से मदद मांगा करे तो उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं, ताहम ''एह़तियात़न दूसरों से मदद न मांगना'' शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा वार है कि उस ने इस शख़्स का ज़ेह्न **मुन्तशिर** कर रखा है जभी तो ''एह़तियात़'' के नाम पर इस ''वस्वसे'' के मुत़ाबिक़ अ़मल कर रहा है कि हो सकता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी और से मदद मांगना कोई ग़लत़ काम हो ! अगर येह वस्वसे का शिकार न होता तो इसे ''एह़तियात़'' का नाम देता ही क्यूं ! उसे अपने **वस्वसों का इलाज** करना ज़रूरी है, क्यूं कि

इस वस्वसे की पैरवी में बहुत सारी क़ुरआनी आयतों और मुबारक ह़दीसों की मुख़ा-लफ़त पाई जा रही है, **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلہٖ وسلَّم दूसरों से मदद मांगने की इजाज़त इनायत फ़रमा रहे हैं और येह है कि अपनी ''वस्वसा मार्का एह़तियात़'' पर अड़ा हुवा है ! ऐसे शख़्स को क़ुरआने करीम की इन 6 आयाते मुबा-रका पर ठन्डे दिल से ग़ौर करना चाहिये जिन में ग़ैरे ख़ुदा से मदद लेने का साफ़ साफ़ अल्फ़ाज़ में तज़्किरा मौजूद है। चुनान्चे

《1》 नेकी में एक दूसरे की मदद करो :

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ ۪ (پ٦، المائدہ : ٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो।

《2》 सब्र और नमाज़ से मदद चाहो : وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो। (پ١، البقرۃ:٤٥)

《3》 सिकन्दर ज़ुल क़रनैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **ने मदद मांगी :** जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिकन्दर ज़ुल क़रनैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जानिबे मशरिक़ सफ़र फ़रमाया तो एक क़ौम की शिकायत पर याजूज, माजूज और उस क़ौम के दरमियान दीवार क़ाइम करते हुए उस क़ौम के अफ़राद से इर्शाद फ़रमाया : فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मेरी मदद त़ाक़त से करो। (پ١٦، الكهف:٩٥)

《4》 दीने ख़ुदा की मदद करो : اِنْ تَنْصُرُوا اللهَ يَنْصُرْكُمْ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अगर तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे **अल्लाह** तुम्हारी मदद करेगा। (پ٢٦، محمد:٧)

《5》 नबी का ग़ैरुल्लाह से दीन के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

लिये मदद त़लब फ़रमाना : ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया :

مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَی اللّٰہِ ؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰہِ ۚ (پ۳، ال عمران:۵۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कौन मेरे मददगार होते हैं **अल्लाह** की त़रफ़? ह़वारिय्यों ने कहा : हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं।

﴾6﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **का ग़ैरुल्लाह को मददगार फ़रमाना :**

فَاِنَّ اللّٰہَ ہُوَ مَوْلٰىہُ وَجِبْرِیْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِکَۃُ بَعْدَ ذٰلِکَ ظَہِیْرٌ ﴿۴﴾ (پ۲۸، التحریم۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक **अल्लाह** उन का मददगार है और जिब्रील और नेक ईमान वाले और इस के बा'द फ़िरिश्ते मदद पर हैं।

कुन का ह़ाकिम कर दिया अल्लाह ने सरकार को
काम शाख़ों से लिया है आप ने तलवार का

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कोई फ़र्दे बशर ग़ैरे ख़ुदा की मदद के बिग़ैर रह ही नहीं सकता !

सुवाल (14) : क्या आप के कहने का मत़लब येह है कि कोई फ़र्दे बशर ग़ैरे ख़ुदा की मदद के बिग़ैर रह ही नहीं सकता ?

जवाब : जी हां। म-सलन आप कार में जा रहे हैं, अचानक आप की कार रोड पर "अड़" गई, धक्के देने की ह़ाजत पेश आई ! क्या करेंगे ?

ला मुह़ाला राहगीरों से ही अ़र्ज़ करना होगा कि बराए मेहरबानी ज़रा धक्का लगा दीजिये ! हो सकता है बा'ज़ रह़्म खा कर धक्के लगाएं और गाड़ी चल पड़े ! देखा आप ने ! आप को ह़ाजत पेश आई, आप ने ग़ैरे ख़ुदा से ह़ाजत रवाई चाही, उन्हों ने मदद कर दी और आप की मुश्किल कुशाई हो गई ! अगर आप कहें कि येह तो चलते फिरते ज़िन्दा इन्सानों ने मदद की ! तो लीजिये बा'दे वफ़ात मदद की ऐसी दलील अ़र्ज़ करता हूं कि इस "मदद" का हर मुसल्मान असर लिये हुए है चुनान्चे

50 की जगह पांच नमाज़ें कैसे हुईं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : **शहन्शाहे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी उम्मत पर **पचास** नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई थीं । जब मैं **मूसा** (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के पास लौट कर आया तो मूसा (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने दरयाफ़्त किया कि **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने आप (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की उम्मत पर क्या फ़र्ज़ किया है ? मैं ने उन्हें बताया तो कहने लगे : अपने रब तआ़ला के पास लौट कर जाइये, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत इतनी त़ाक़त नहीं रखती । मैं लौट कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास गया, उन से कुछ ह़िस्सा कम कर दिया गया । जब फिर मूसा (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के पास लौट कर आया तो उन्हों ने मुझे फिर लौटा दिया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : अच्छा **पांच** हैं और **पचास** की क़ाइम मक़ाम हैं क्यूं कि हमारे क़ौल में तब्दीली नहीं होती । मूसा (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام)

के पास लौट कर आया । उन्हों ने कहा : फिर **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला के पास लौट जाइये । मैं ने जवाब दिया : मुझे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से शर्म मह़सूस होने लगी है । (ابنِ ماجہ ج۲ص۱٦٦ حدیث ۱۳۹۹) देखा आप ने ! **ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **ने अपनी वफ़ाते ज़ाहिरी के ढाई हज़ार बरस बा'द उम्मते मुस्त़फ़ा की येह मदद फ़रमाई कि शबे मे'राज में पचास नमाज़ों के बजाए पांच करा दीं । अल्लाह** तआ़ला जानता था कि नमाज़ें पांच रहेंगी मगर पचास मुक़र्रर फ़रमा कर फिर दो प्यारों के ज़रीए़ से **पांच** मुक़र्रर फ़रमाई । यहां दिलचस्प बात येह है कि जो लोग शैत़ान के वस्वसों में आ कर वफ़ात याफ़्तगान की मदद और तआ़वुन का इन्कार कर देते हैं वोह भी 50 नहीं पांच नमाज़ें ही पढ़ते हैं ह़ालां कि पांच नमाज़ों के तकर्रुर में यक़ीनी त़ौर पर ग़ैरुल्लाह की मदद शामिल है !

जन्नत में भी ग़ैरुल्लाह की मदद की ह़ाजत

जन्नत में भी ग़ैरे ख़ुदा की मदद की ह़ाजत होगी, जी हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़युब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जन्नती **जन्नत** में ड़-लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام) के मोह़ताज होंगे, इस लिये कि वोह हर **जुमुआ़** को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "**تَمَنَّوْا عَلَيَّ مَا شِئْتُمْ**" या'नी मुझ से मांगो जो चाहो !" वोह जन्नती, **ड़-लमाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की त़रफ़ मु-तवज्जेह होंगे कि अपने रब्बे करीम से क्या मांगें ? वोह फ़रमाएंगे : "येह मांगो वोह मांगो ।"

فَهُمْ يَحْتَاجُوْنَ اِلَيْهِمْ فِى الْجَنَّةِ كَمَا يَحْتَاجُوْنَ اِلَيْهِمْ فِى الدُّنْيَا۔ तो जैसे लोग दुन्या में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام के मोह़ताज थे **जन्नत** में भी उन के मोह़ताज होंगे।" (اَلْجَامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطی ص ۱۳۵ حديث ۲۲۳۵)

इन्सान आ़म तौ़र पर ज़िन्दगी के हर मोड़ पर दूसरे का मोह़ताज रहता है, कभी मां बाप का, कभी दोस्त व अह़बाब का, कभी पोलीस वालों का तो कभी राह चलते आ़म आदमी का। ऐसी सूरत में वोह "मोह़तात़" रहने में काम्याब भी किस त़रह़ हो सकता है ! हां जो वाके़ई वस्वसों का शिकार नहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से दूसरों को सच्चे दिल से मददगार तस्लीम करता है बा वुजूद इस के वोह सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से मदद मांगता है तो इस में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं।

तू है नाइबे रब्बे अक्बर प्यारे हर दम तेरे दर पर
अहले ह़ाजत का है मेला صلّى الله عليك وسلم

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना कभी वाजिब भी होता है ?

सुवाल (15) : क्या कोई ऐसी भी सूरत है जिस में ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना वाजिब हो जाता है ?

जवाब : जी हां, बा'ज़ सूरतें ऐसी हैं जहां ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना **वाजिब** होता है और बा'ज़ ह़ालात में ब सूरते क़ुदरत बन्दे पर भी वाजिब हो जाता है कि वोह मदद करे। इस ज़िम्न में

वोह फ़िक़्ही जुज़्इय्यात पेश किये जाते हैं जिन में मदद (तआ़वुन) मांगने और मदद करने के वुजूब (या'नी वाजिब होने) का तज़्किरा है।

वोह मक़ामात जहां मदद मांगना वाजिब है

(1) अगर (लिबास पास नहीं और ऐसी सूरत है कि नंगे नमाज़ पढ़ेगा और) दूसरे के पास कपड़ा है और ग़ालिब गुमान है कि मांगने से दे देगा, तो (ब सूरते लिबास मदद) **मांगना** वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 485) **(2)** अगर अपने साथी के पास पानी है और येह गुमान है कि (ब सूरते पानी मदद) मांगने से दे देगा तो मांगने से पहले **तयम्मुम** जाइज़ नहीं फिर अगर नहीं मांगा और **तयम्मुम** कर के नमाज़ पढ़ ली और बा'दे नमाज़ मांगा और उस ने दे दिया या बे मांगे उस ने ख़ुद दे दिया तो वुज़ू कर के नमाज़ का इआ़दा (या'नी दोबारा पढ़ना) लाज़िम है और अगर मांगा और न दिया तो नमाज़ हो गई और अगर बा'द को भी न मांगा जिस से देने न देने का ह़ाल खुलता और न उस ने ख़ुद दिया तो नमाज़ हो गई और अगर देने का ग़ालिब गुमान नहीं और **तयम्मुम** कर के नमाज़ पढ़ ली जब भी येही सूरतें हैं कि बा'द को पानी दे दिया तो वुज़ू कर के नमाज़ का इआ़दा करे वरना हो गई। (ऐज़न, स. 348)

वोह मक़ामात जहां मदद करना वाजिब है

(1) कोई मुसीबत ज़दा फ़रियाद कर रहा हो, उसी नमाज़ी को पुकार रहा हो या मुत़्लक़न किसी शख़्स को पुकारता हो या कोई डूब रहा हो या आग से जल जाएगा या अन्धा राहगीर कूएं में गिरा चाहता हो, इन सब सूरतों में (नमाज़) तोड़ देना **वाजिब** है, जब कि येह (नमाज़ी) उस

के बचाने पर क़ादिर (या'नी कुदरत रखता) हो। (ऐज़न, स. 637) **(2)** मां बाप, दादा दादी वग़ैरा **उसूल**[1] के महज़ बुलाने से नमाज़ क़त्अ़ करना (या'नी तोड़ना) जाइज़ नहीं, अलबत्ता अगर इन का पुकारना भी किसी बड़ी मुसीबत के लिये हो, जैसे ऊपर मज़्कूर हुवा तो तोड़ दे (और इन की मदद को पहुंचे), येह हुक्म फ़र्ज़ (रक्अ़तों) का है और अगर नफ़्ल नमाज़ है और उन को मा'लूम है कि नमाज़ पढ़ता है तो उन के मा'मूली पुकारने से नमाज़ न तोड़े और इस का (नफ़्ली) नमाज़ पढ़ना उन्हें मा'लूम न हो और पुकारा तो तोड़ दे और जवाब दे, अगर्चे मा'मूली तौ़र से बुलाएं। (ऐज़न, स. 638) **(3)** कोई सो रहा है या नमाज़ पढ़ना भूल गया तो जिसे मा'लूम हो उस पर वाजिब है कि (उस की इस त़रह़ मदद करे कि) सोते को जगा दे और भूले हुए को याद दिला दे। (ऐज़न, स. 701) **(4)** भूल कर खाया या पिया या जिमाअ़ किया रोज़ा फ़ासिद न हुवा ख़्वाह वोह रोज़ा फ़र्ज़ हो या नफ़्ल। और रोज़े की निय्यत से पहले येह चीज़ें पाई गईं या बा'द में, मगर जब याद दिलाने पर भी याद न आया कि रोज़ादार है तो अब फ़ासिद हो जाएगा, बशर्ते़ कि याद दिलाने के बा'द येह अफ़्आ़ल वाक़ेअ़ हुए हों मगर इस सूरत में कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं। **(5)** किसी रोज़ादार को इन अफ़्आ़ल में देखे तो याद दिलाना वाजिब है, (उस की इस त़रह़ मदद न की या'नी) याद न दिलाया तो गुनहगार हुवा, मगर जब कि वोह रोज़ादार बहुत कमज़ोर हो कि याद दिलाएगा तो वोह खाना छोड़ देगा और कमज़ोरी इतनी बढ़ जाएगी कि रोज़ा रखना दुश्वार होगा और खा लेगा तो रोज़ा भी अच्छी त़रह़ पूरा कर लेगा और दीगर इ़बादतें भी बख़ूबी अदा कर लेगा तो इस सूरत में याद न दिलाना बेहतर है। (ऐज़न, स. 981)

مدینہ

1 : म-सलन मां, नानी, परनानी इसी त़रह़ ऊपर तक नीज़ बाप, दादा, परदादा इसी त़रह़ ऊपर तक येह सब "उसूल" कहलाते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

(6) जो शख़्स (क़ुरआने करीम) ग़लत़ पढ़ता हो तो सुनने वाले पर (इस अन्दाज़ में मदद करना) **वाजिब** है कि बता दे, बशर्ते कि बताने की वजह से कीना व ह़सद पैदा न हो। इसी त़रह़ अगर किसी का मुस्ह़फ़ शरीफ़ (क़ुरआने पाक) अपने पास आ़रियत (या'नी कुछ वक़्त के लिये) है, अगर उस में किताबत (लिखाई) की ग़-लती देखे, बता देना (कि येह भी एक मदद ही की सूरत है जो कि) वाजिब है। (ऐज़न, स. 553)

है इन्तिज़ामे दुन्या इमदादे बाहमी से

आ जाएगी ख़राबी इमदाद की कमी से

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सुवाल (16) : क़ुरआने करीम में है : وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللهِ (پ۱۱، یونس:۱۰۶) तरजमा : "**अल्लाह** के सिवा उन को न पुकारो।" **मा'लूम हुवा कि ग़ैरे ख़ुदा को पुकारना शिर्क है।**

जवाब : इस आयत में مِنْ دُوْنِ اللهِ (या'नी **अल्लाह** के सिवा) को पुकारने से मन्अ़ किया गया है यहां मुराद बुत हैं और पुकारने से मुराद इ़बादत है। (تفسیر طبری ج٦ ص ٦١٨) **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ऊपर बयान कर्दा आयत के ह़िस्से का तरजमा यूं फ़रमाते हैं : "और **अल्लाह** के सिवा बन्दगी न कर।" दूसरी आयात इस मा'ना की ताईद करती हैं म-सलन **अल्लाह तआ़ला** फ़रमाता है :

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۟ قف (پ۲۰، القصص:۸۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** के साथ दूसरे ख़ुदा को न पूज उस के सिवा कोई ख़ुदा नहीं।

मा'लूम हुवा कि ग़ैरे ख़ुदा को ख़ुदा समझ कर पुकारना शिर्क है क्यूं कि

येह ग़ैरे ख़ुदा की इबादत है। (मज़ीद तफ़्सीलात के लिये ह़ज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان की किताब "इल्मुल क़ुरआन" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

अल्लाह की अ़त़ा से हैं मुस्त़फ़ा मददगार

हैं अम्बिया मदद पर हैं औलिया मददगार

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुवाल (17) : मुश्रिकीन बुतों से और आप नबियों और वलियों से मदद मांगते हैं, क्या दोनों शिर्क में बराबर न हुए ?

जवाब : مَعَاذَ اللّٰه (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह) दोनों का मुआ़-मला हरगिज़ एक जैसा नहीं, मुश्रिकीन का अ़क़ीदा येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बुतों को उलूहिय्यत दे दी (या'नी मा'बूद बना दिया) है। नीज़ वोह बुतों वग़ैरा को सिफ़ारिशी और वसीला समझते हैं और बुत फ़िल ह़क़ीक़त ऐसे नहीं हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम मुसल्मान किसी मुक़र्रब से मुक़र्रब ह़त्ता कि मह़बूबे रब, ताजदारे अ़रब, सरापा लाइक़े ता'ज़ीमो अदब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की भी उलूहिय्यत (या'नी मुस्तह़िक़े इबादत होने) के क़ाइल नहीं हैं, हम तो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा और ए'ज़ाज़ी त़ौर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इज़्न व अ़त़ा (या'नी इजाज़त व इनायत) से शफ़ीअ़ व वसीला और ह़ाजत रवा व **मुश्किल कुशा** मानते हैं।

बुतों से मदद मांगना शिर्क है

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुश्रिकीन का अपने बुतों से मदद मांगना येह बिल्कुल शिर्क है। (और येह शिर्क होना) इस लिये कि वोह उन बुतों में ख़ुदाई असर और उन को छोटा ख़ुदा मान कर मदद मांगते हैं और इसी लिये इन को इलाह या शु-रका (या'नी इ़बादत के लाइक़ या **अल्लाह** के शरीक) कहते हैं या'नी इन बुतों को **अल्लाह** का बन्दा और फिर उलूहिय्यत का ह़िस्सेदार मानते हैं। (जाअल ह़क़, स. 214)

शिर्क की ता'रीफ़

शिर्क का मा'ना है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को वाजिबुल वुजूद या मुस्तह़िक़्के इ़बादत (इ़बादत के लाइक़) जानना या'नी **उलूहिय्यत** में दूसरे को शरीक करना और येह **कुफ़्र** की सब से बद तरीन क़िस्म है। इस के सिवा कोई बात कैसी ही शदीद कुफ़्र हो ह़क़ीक़तन **शिर्क** नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 183) **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "आदमी ह़क़ीक़तन किसी बात से मुश्रिक नहीं होता जब तक ग़ैरे ख़ुदा को मा'बूद (या'नी इ़बादत के लाइक़) या मुस्तक़िल बिज़्ज़ात (या'नी अपनी ज़ात में ग़ैरे मोह़ताज। म-सलन येह अ़क़ीदा रखना कि इस का इ़ल्म ज़ाती है) व वाजिबुल वुजूद न जाने।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 131) **शर्हे अ़क़ाइद** में है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلٰی)

"शिर्क", **अल्लाह तआ़ला** की उलूहिय्यत में किसी को शरीक जानना जैसे मजूसी (या'नी आतश परस्त) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा वाजिबुल वुजूद मानते हैं या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी को इबादत के लाइक़ जानना जैसे बुतों के पुजारी । (شرح عقائد نسفیہ ص ۲۰۱)

मैं क़ुरबां इस अदाए दस्त गीरी पर मेरे आक़ा
मदद को आ गए जब भी पुकारा या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

100

एक चुप सो सुख

तालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे हिसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

16 र-मज़ानुल मुबारक 1433 सि.हि.
5-8-2012

येह रिसाला पढ़कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

फ़ेहरिस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب و ترہیب)

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآنِ پاک	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	دلائل النبوۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر طبری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الطبقات الکبریٰ	دار الکتب العلمیہ بیروت
تفسیر قرطبی	دار الفکر بیروت	جزء الحسن بن عرفۃ العبدی	مکتبہ دار الاقصیٰ کویت
تفسیر کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	معرفۃ الصحابۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر بیضاوی	دار الفکر بیروت	المواہب اللدنیۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر ابی سُعُود	دار الفکر بیروت	تاریخ دمشق	دار الفکر بیروت
تفسیر بغوی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	اسد الغابۃ	دار احیاء التراث العربی بیروت
تفسیر خازن	مصر	تاریخ الخلفاء	باب المدینہ کراچی
تفسیر نسفی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	ازالۃ الخفاء	باب المدینہ کراچی
تفسیر جلالین	باب المدینہ کراچی	الشفاء	مرکزِ اہلسنّت برکاتِ رضا ہند
تفسیر روح المعانی	دار احیاء التراث العربی بیروت	اخبار الاخیار	فاروقی اکیڈمی گمبٹ پاکستان
تفسیرِ خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	حجۃ اللہ علی العالمین	مرکزِ اہلسنّت برکاتِ رضا ہند
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	شواہد الحق	مرکزِ اہلسنّت برکاتِ رضا ہند
مسلم	دار ابن حزم بیروت	شواہد النبوۃ	مکتبۃ الحقیقۃ استنبول
ترمذی	دار الفکر بیروت	الزھد الکبیر	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت
ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	قوت القلوب	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	رسالہ قشیریہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الاذکار	دار الکتب العلمیۃ بیروت
معجم صغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مصباح الظلام	المدینۃ المنورہ
مسند ابی یعلی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	شرح الصدور	مرکزِ اہلسنّت برکاتِ رضا ہند
مصنف ابن ابی شیبہ	دار الفکر بیروت	راحت القلوب	ضیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور
مستدرک	دار المعرفۃ بیروت	عیون الحکایات	دار الکتب العلمیۃ بیروت
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت	سوانح کربلا	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مسند الفردوس	دار الکتب العلمیۃ بیروت	جاء الحق	نعیمی کتب خانہ گجرات
جامع الاصول فی احادیث الرسول	دار الکتب العلمیۃ بیروت	کرامات صحابہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت	قصیدۂ نعمانیہ مع الخیرات الحسان	مکتبۃ الحقیقۃ استنبول
مسند الشہاب	مؤسسۃ الرسالۃ بیروت	جواہر خمسہ	باب المدینہ کراچی
فتح الباری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوی رملی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مرقاۃ المفاتیح	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاونڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
اشعۃ اللمعات	کوئٹہ	ملفوظات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مرآۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الحرز الثمین	مخطوطہ	وسائلِ بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی